सौंपि दियो [illegible] और [illegible] में । [illegible]

[illegible]

मन वच कर्म नीति है

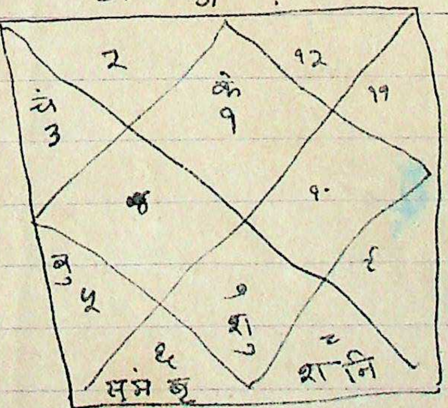
मन वच कर्म निर्लेप [illegible] में [illegible] ॥

[illegible]

नर्मद [illegible]

[illegible]

सम्वत् २०१४ ।। शाके: १८७९ ।। आश्वीन मासे । कृष्णपक्ष षष्ठ्याम् । भौमवासरे ।। आर्द्रा नक्षत्रे तदुपरि पुनर्वसु नक्षत्रे इष्टकाल ३१।३४ प्रथम चरण । १७ सितम्बर १९५७ समय रात को



मोको प्रभु [illegible] [illegible] गनिमें । [illegible] ।।

[illegible] [illegible] के [illegible]

~~मन वच कर्म नीति है~~

मन वच कर्म [illegible] उन्हीं में [illegible] ।।

[illegible] [illegible]

नर्मद महान

सुनि दुर्लभ [illegible]

श्रुति वचन [illegible] मन [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

मनजी

* विनय करौं अति नम्र भाव ते, बात हमारी मानिये ॥

मनुआँ स्वामिनि ही को गुनिये ॥

* साँचौ हितू तुम्हारी वैही, और नहीं अपनैये ॥

भवबन्ध कौ निरन्तर रत है उनहीं में रमि जैये

कुकल्प-दलन विमल मधुर उनके [illegible]

मुनि दुर्लभ भवभीति विनाशन, दर्शन उनके पैये

श्वेत कंज पद पदम मनोहर मन मधुकर है जैये

[illegible] अपनो आप [illegible] ॥

भवक भवन भवसिन्धु पोत, पद पंकज में निमैये

संसृति द्वन्द्व दुःख व्याकुल अति [illegible]

॥ मधु वन्तो ॥

स्वामिनी! प्रेम लेहु अपनाय ॥

बुद्धि में मन के लय हो जाने पर सब वृत्तियों का निरोध करने वाली जो स्थिति है, उसका नाम है ब्रह्मविद्या और वह ब्रह्मचर्य का पालन करने से ही उपलब्ध होती है।

(सनत्सुजातीय
उद्योग पर्व)

ॐ नमः भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो नरसिंह नमस्ते

श्री: स्वामि नैनम:

रे मन कृष्ण नाम कहि लीजैं।

गुरु के वचन अटल करि मानहि, साधु समागम कीजैं॥
पढ़िये जानिये भक्ति भागवत, और कहा कथि कीजैं।
कृष्णनाम बिन जन्म बादही, बिरथा काहे जीजैं॥
कृष्ण नाम रस बह्यो जात है, तृषावन्त ह्वै पीजैं।
सूरदास हरी शरण ताकिये, जन्म सफल करि लीजैं॥

रे मन मूरख जन्म गवायो।

कर अभिमान विषय से रंच्यो, श्याम शरण नहिं आयो।
यह संसार फूल सेमर कौ, सुन्दर देख लुभायो।
चाखन लाग्यो रुई उड़, हाथ कछू ना आयो।
कहा भयो अबके मन सोंचे, पहिले नहीं कमायो।
सूरदास भगवन्त भजन बिन सिर धुनि धुनि पछितायो॥

तेरे दया धरम न हिं
धा * × २ धा * २ नी * × २ धा * मा *

मन में
मा मा गा *

कागज की तो नाव बनाई छोड़
मा * × ४ धा * × ४ मा * धा * नी * ~~[illegible]~~

दई जल चल में
नी * × २ धा * मा * मा * धा * नी * धा *

धर्मी धर्मी पार उतर गये पा पी
रें * × ४ नी नी * धा * × ४ धा * नी *

डू बे जल में
धा * मा * मा मा गा *

[illegible]

श्री स्वामिन्यै नमः

पहिला सप्तक दर्मियानी सप्तक

स्थायी

मो ह न तो री वं ______

म* ग* म ध* नि* ध* नि* सां रें*

शी ई ई र री हाँ आ री

सां ध* नि* सां नि* ध* म* म

अन्तरा

सु नु स खी अ ए सी व जी ई

ध* सां सां सां सां गं* रें* सां ध* नि*

मो रे र ही र ही रजि पा

सां सां सां ग* सां ग* रें* सां

ध व र आ म

सां नि* ध* म* म

अन्तरा

वं— शी ब जा व त जि या
रें* नि* रें* गं* मं मं मं धं* धं*

ल ल चा आ व त नं न्द न
मं ध* सों सां गं* मं म* गं* मं

ब न्द न ब्र ज रा आ ज
गं* रे* सां नि* ध* म* म:

भैरवी

× 1 0 3
मोहन तोरी बंशी हरी हाँरी ॥ मो॰॥
सुनु सखी सैली बजी मोरे रहि रहि जिया घबड़ाय ॥मो॰॥
बंशी बजावत जिया घबड़ावत नन्द नन्दन ब्रज राज ॥मो॰।

ईमन राग

सबही तीवर स्वर जहाँ वादि गन्धार सुहाय।
अरु सम्वादि निषाद ते ईमन राग कहाय ॥१॥

(ताल ३)

स्थायी | मोरी नाव करु पार सँवलिया।
गहरी नदिया नाव पुरानी ॥मोरी०॥

अन्तरा | सूझ पड़त नहीं जुगत कछु आव-
शरणा गत हूं नाथा ते हो केवट है मतवार॥

सां निं धप मप गम पा पा रेगरे सा ॥

गजल एक

तु कितनी अच्छी है तु कितनी भोली है प्यारी२ है ओ माँ २

ये जो दुनिया है ये वन है कांटों का तु फुलवारी है ओ माँ२

दुखने लगी है मां तेरी अखियां, मेरे लिये जागी है तु सारी२ रतियां

मेरी निंदिया पे अपनी निंदिया भी तुने वारी है ओ मां २

अपना नहीं तुझे सुख दुख कोई, मैं मुस्काया तु मुस्काई मैं रोया तू रोई

मेरे हंसने पे मेरे रोने पे तु बलिहारी है ओ माँ २

मां बच्चो की जां होती है, वो होते है किस्मत वाले जिनके मां होती है,

तू कितनी सुन्दर है तु कितनी शीतल है न्यारी है ओ माँ २

=

मेरे राजा तुझको ढूंढू मै कहां मेरे लाल तुझको ढूंढू मै कहां

तु क्या जाने तेरे घर से चले जाने पर, क्या बीती मेरे दिल पर प्यारे

तेरी माता बहना तेरे गम में रो रो मर जायेंगे सारे

आ जा वापस आजा मेरे प्यारे

हमसफर क्या है मेरा इक सपना मेरा वह भी टूटा

कैसी दुनिया मेरी आखों के तारे तु क्यों रुठा

=

स्थायी – मैंने देखीरी आज मोहनकी हँसनि ।

अन्तरा – आरुनाई अधरन की अद्भुत, मुतियन लर दर ब
पांतीरी दसन ।। मैंने।।
या शोभा के दृग हैं प्यासे,
पीवन लागे भरि-भरि के नयन ।। मैंने ।।
चन्द्र सखी भज बाल कृष्ण छवि-
मनमोहन से लागीरी लगन ।। मैंने ।।

सरगम : ध ध ध नि सां सां धनी सांनी ध प
ह न की ह स नि मैं ने दे खी री आ
मप गम
ऽज मो ओ

सरगम –	ध	ध	ध	नि	सां	सां	ध	नी
बोल –	ह	न	की	ह	स	नि	मैं	ने
मात्रा –	१	२	३	४	५	६	७	८
चिन्हताल –	×				२			

दे खी री

सरगम –	सां	नी	ध	प	म	प	ग	म
बोल –	दे	खी	री	आ	ऽज	मो		ओ
चिन्हताल –	०				३			
मात्रा –	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

भाई बहन,

आ जरा आज तो मुस्करा ले
ये हंसी ये खुशी दो घड़ी है जाने मन वस यही जिन्दगी है,
आ तो डाले दिल पर कोई प्यार की रागनी छेड़ दे
ये जहां ये समां कल कहां जाने मन फिर मिले न मिले
बेरुखी में जो हुआ सो हुआ आज तक के लिये माफ है,
गम नहीं है हर किसी बात को दिल अगर आपका साफ है,
ले उठा हाथ में जाम ले जाम आंखों के है थाम ले
और पी ह दिल से या होश का आज मत नाम ले
दस्तूर जमाने का ये बदला नहीं जाता
हाय हर फूल यहां पावों से मसला नहीं जाता
हम जान भी उनको दे दे जो प्यार के मतवाले
हम जान भी उनकी लेले जो तीरछी नजर डाले
ओ दिल फेंक हमने देखे देखे दिल बर तो न पाया
जिस प्यार के दिवाने वो प्यार तो न पाया
बाजार में जो मजनु कहता है लैला २
सब खूब जानते है कितना है दिल का मैला
बांचये जी शक्ल इनके मनके है बड़े काले
ओ दिल के मेले में कोई फिरता है मुस्कराता
खाली है जेब जिसकी वो भी अकड़ दिखलाता

स्थाई । ऐ दर्दे दिल किसी दिन होगा जुदा न हमसे ।
आबाद यह मकां है तेरे ही दम कदम से ॥

अन्तरा । हम गमजुदों का रोना दुनियां को एक हंसी है ।
हाँ इश्क के रवूं संभलना गिरना न चश्म नम से ॥
ऐ हसरतो हया भी होती मिजाज पुरसी ।
यह हाले दिल कहेंगे फुरसत मिली जो गम से ॥
'बेताब' इस जहां में कोई नहीं किसी का ।
देते हैं अब दिखाई अपने भी मुझको (प) गम से ॥

७ नं के बाद से अलापना चाहिये ।

चाबी नं०	१६	१४	१२	११	७	८	
बोल	ऐ	द	र्दे	दिल	कि	सी	
चाबी नं०	१४	१६	१२	१४	१६	१४	१२
बोल	दिन	हो	गा	जु	दा	न	ह
चाबी नं	१२	८					
बोल	म	सेऽऽऽ					

अन्तरा

चाबी नं	१६	१२	१४	१३	२१	१८
	हमगमजु	दों	का	रोऽऽ	नाऽऽ	दुनियाँ

तुम्हें आखिर हमने बोली चाहत की मीठी बोली
इस तरह से जो बोली हमने की कच्ची बोली
दिल ऐसा चाहा अपना मेरा जो कहीं खोले
धीरे २ मोहब्बत जवां हो गयी
बात इतनी बढ़ी चर्चा हो गयी
चुपके २ ये कहती हैं नीची नजर
तुमको बनठन के जाना है साजन के घर
आज किस्मत बड़ी मेहरबां हो गयी
आप ~~क्या~~ क्या जान कर मुझसे आ के मिले
फूल अरमान के दिल में इतने खिले
इश्क की जिन्दगी गुलिस्तां हो गयी
कर चुके आप मुझसे अहदे वफा
फर्क इतना ही दोनों में बाकी रहा
आप दिल बनके गये और मैं जां हो गयी

=

चाबी नं	१६	१२		१६
बोल	ऽऽ	ओ एक हँसी		है ऽ

=

गजल

~~सुनले मेरा अफसाना ऐ~~

स्थायी — नहीं अच्छा तेरा एक बारगी रूपोश हो जाना।
कहीं रुस्वा न कर डाले मेरा मदहोश हो जाना॥

अन्तरा — तुम्हें मेरी कसम तुमही कहो कि सब्र क्यो कर हो।
मेरा तुझ पर फ़िदा होना तेरा रूपोश हो जाना॥
ओ ऐ सङ्ग दिल तुझको कभी पे मोम कर देगा।
तेरा जुल्मो सितम करना मेरा खामोश हो जाना
अगर इस बुत से मिलना चाहे तो पहिले अजल से मिल
'निजामी' कुछ नहीं दुस्वार है आगोश हो जाना॥

स्थायी

चाबी नं	१४	१२	११	६	९	११
बोल	नहीं अच्छा	तेरा एक	बारगी	रू	पोश	हो
चाबी नं.	६	९				
बोल	जा	नाऽऽ				

चाबी नं	१६	१२	१६	१४
बोल	तुम्हें मेरी कसम तुमही कहो	किसब्र	क्यों	कर हो ऽऽ

कन्हैया तुम्हें एक नज़र देखना है।
जिधर तुम छिपे हो उधर देखना।
अगर तुम हो दीनों की आहों के आशिक।
तो आहों का अपनी असर देखना है॥
उबारा था जिस हाथ ने गीध गज को।
उसी हाथ का अब हुनर देखना है॥
विदुर भीलनी के जो खाए तुमने दोने
तो इनको भी एक नज़र देखना है
टपकते हैं दृग बिन्दु तुमसे ये कहकर।
तुम्हें अपनी उलफत में तर देखना है

आजा तुमको पुकारे मेरा प्यार नील कमल आजा
मैं तो मिटा हूँ तेरी याद में
आखिरी पल है आखिरी आस तुझे ढूंढ रही है,
डूबती सांसें बुझती निगाहें सामने आजा इक बार
दोनों जहां की सेर चढ़ा दी मैंने याद में तेरी
अब तो चली आ इस पार इतने युगों तक इतने दुखों को
कोई सह के सोचता तेरी कसम तू किसी की कोई कहना
कबूल है तेरा इकरार तेरी नजर की ओट पड़े
तो कुछ प्यार मिलन की तेरे बदन की ओर गिरे

भजन (ताल दादरा)

स्थायी | प्रभो डालिये जान बेजान हैं हम।
तुम हो ज्ञान के रूप अज्ञान हैं हम॥

अन्तरा — इसी एक नाते हम को उबारो।
तुम्हारी ही भक्तों के सन्तान हैं हम॥
पिताजी तुम्हें ध्यान रहता हमारा।
बड़ा ही गजब है कि बेध्यान हैं हम॥
सुना है कि तुम सब हो और गुप्त हो।
प्रकट क्यों न हो जाओ हैरान हैं हम॥

१ से ९ तक अलापना चाहिये

स्थायी

चाबी नं.	१०	६	१० ७	६	७	५	७	१०
बोल	प्र	भोऽडा लि येऽजान		बे	जा	न	हैंऽ	हम

अन्तरा

चाबी नं.	१४	११	१२	६	७
बोल	इसी एक नाते से	हम	को	उबा	रोऽ

ओ मतिमन्द अज्ञानी जन्म ही भक्ति बिन खोया।
बिगाड़ा काम अपने को रहा गाफिल सदा सोया॥
पड़ा परदा ग़फलत का अकल की आँख फूटे।
सुधा के खेत में तैने ज़हर का बीज क्यों बोया॥
विषय में हो के मतवाला किया बरबाद (नर तन) जीवन को।
विमुख निज ईश से होके वृथा ही भार ही ढोया॥
भलाई खाक ओ खातिर तुझे मंजा था मालिक ने।
मगर अफसोस उलटा ही चलकर जान का गोया॥
जो करना फर्ज था तेरा किया उसको न क्यों शाख।
चलके आखिर को दुनियाँ से ओ कि बलदेव क्यों रोया॥

सफ़र
जिन्दगी का सफर है ये कैसा सफर? कोई समझा नहीं कोई जाना नहीं।
है ये कैसी डगर चलते है सब मगर
जिन्दगी को बहुत प्यार हमने दिया
मौत से भी मोहब्बत निभायेंगे हम
रोते रोते जमाने में आये मगर हंसते हंसते जमाने से जायेंगे
जायेंगे पर किधर है किसे ये खबर
ऐसे जीवन भी है जो जिये ही नहीं
जिनको जीने से पहले मौत आ गई
फूल ऐसे भी हैं जो खिले ही नहीं

भजन

स्थायी | मगन ईश्वर की भक्ती में अरे मन क्यों नहीं होता।

अन्तरा – जो इच्छा है तुझे कर जाय सारे मैल पापों के॥

(७ नम्बर से अलापना चाहिये)

स्थायी

चाबी नं ७ ११ १२ ११ ६

बोल म गऽन ईऽऽऽ श्वर की ऽ भ की ऽऽ

चाबी नं ~~में~~ ७ ५ ४ २ ६

बोल मेंऽऽ अ रे मन क्योऽ न

चाबी नं १० ६ ७

बोल हीं हो ताऽ

अन्तरा

चाबी नं १४ १२ १० ६ १०

बोल जो इच्छा है तुझे कर जा. यँ सा आ

चाबी नं ७ १० ६ ७

बोल रेऽऽ मैल पा पोंऽ केऽ

मगन ईश्वर की भक्ति में अरे मन क्यों नहीं होता ।
पड़ा आलस्य में ख्वाब रहेगा कब तलक सोता ॥
जो [illegible] था है उन्हें हर जायें जो मैल पापों के ।
प्रभु के प्रेम जल में क्यों नहीं अपने को तू धोता ॥
विषय और भोग में फँसकर, न कर बर्बाद जीवन को ।
दमन कर चित्त की वृत्ति को लगा ले योग में गोता ॥
नहीं संसार की वस्तु, कोई भी आपकी है तू ।
वृथा इसके लिये फिर क्यों समय अनमोल तू खोता ॥
कभी उसको ना मिल सकता है फल सुख शान्ति का [illegible] ।
ज्ञान के बीज को अन्तःकरण में जो नहीं बोता ॥
ज्ञान ही एक ऐसा है जो होगा अन्त में साथी ।
न मोह कुटुम्ब आवेगी न बेटा और कोई पोता ॥
भटकता जाबजा नाहक तू किस धन के लिये गाफिल ।
तेरे हृदय के अन्दर ही बहे आनन्द का सोता ॥

जिनको जीने से पहले ही खवाब खो गई
है परेशान जरा रुक के गये चारगर
जीवन से भरी तेरी आंखें मजबूर करें जीने के लिये
सागर भी तरसते रहते हैं तेरे रूप का रस पीने के लिये
तस्वीर बनाये क्या कोई कोई लिखे तुझको पे कविता
रंगों छंदों में समायेगी किस तरह से इतनी सुन्दरता
एक धड़कन है तू दिल के लिये, एक जान है तू जीने के लिये

कारी कारी रे बदरिया छाय रही- मन भाय रही ॥

कारी कारी.....

रैनि अँधेरी कारे बदरा गरजे- बिजुरी चमके चम चम-चम चम

पवन चलत सनानाना ना ना नाना ना- कारी कारी.....

झम झुम झमझुम मेघा बरसे आई घटा घन घोर रे

पी पी पपीहा कूकू कोयलिया- शोर मचावे मोर रे

फुवार पड़त घन घना नाना ना कारी कारी....

प्रथम सप्तक

	रे	ग	म	ध	नी	
सा	०	ग	०	०	०	

का री का री रे ब द रि या
रे* सा रे* गा* गा गा* गा* गा मा* धा*

य छा य रही
मा* गा- गा* रे +

म न भा य रही+
धा* मा* गा गा* रे

फिर पहिले से बजाइये -

मधुबन की सुगंध है सांसों में बांहो में कमल की कोमलता
किरनों का है तेज है चेहरे पे हिरनों की है तुझमे चंचलता
आंचल का तेरे तार बहुत कोई जिगर सीने के लिये
सफ़र
जो तुमको हो पसन्द वही बात कहेंगे
तुम दिन को अगर रात को रात कहेंगें
होते न आप साथ तो मर जाते हम कभी के
पूरे हुए हैं आप से अरमान जिंदगी के
हम जिन्दगी को आपकी सौगात कहेंगे
चाहेंगे निभायेंगे सराहेंगें आप ही को
अपनी जुबां से आपके जज़बात कहेंगे
हम थे जिनके सहारे वो हुऐ न हमारे
डूबी जब दिल की नैया सामने थे किनारे
क्या मोहब्बत के वादे क्या वफा के इरादे
रेत की हैं दिवारें जो भी चाहे गिरादे
है सभी कुछ यहां के दोस्ती है वफा है
अपनी थे कमनसीबी हमको न कुछ मिला है
यु यादें तेरी तनहाई फिर भी डसेगी
वो जिंदगी में कमी थी कमी तो रहेगी

अन्तरा. —

रैनि अँ धेरी कारे

रे * × २ रे * गा * × २ म * × २

बदरा गजैं बिजुरी चमके च म

धा * × ६ मा * × २ धा * × ३ मा * धा *

च म च म च म प व

नी * धा * मा * गा गा * रे * रे * गा *

न च ल त स नी ना ना ना

गा गा गा गा × ३ रे * गा * गा धा * मा *

ना ना नी

गा गा * रे *

फिर पहिले से बजाइये -

पीछे दो सतरे 'नम झुम' और 'पीपी पपीहा' रैनि अंधेरी की तार पर बजेंगी और "कुवारपड़त" "पवन चलत" पर बजेंगी ध्यान करके बजाइये।

नोट यह गायन एकही सप्तक पर बजाकर दिखलाई गई है।

Page 538

हिम्मत

हिम्मत करे इंसान तो क्या हो नहीं सकता
ये जाकि नादान तो क्या हो नहीं सकता
करती हैं जिसे गलियों में बदनाम ये दुनियां
कहती हैं जिसे हसरतें नाकाम ये दुनियां
बन जाये वो अरमान तो क्या हो नहीं सकता
शिकवे बुरी किस्मत के हैं बुजदिल के बहाने
तिनके की तरह तूफां को उड़ा डाला हवा ने
बन जाये तूफां तो क्या हो नहीं सकता

=

दास्ते

ये रेशमी जुल्फे ये शरबती आंखें इन्हें देखकर जी रहे हैं सभी
ओये आंखें शरम से झुक जायगी सारी बातें यहीं बस रुक जायगी
चुप रहना ये अफसाना कोई इनको न बतलाना इन्हें - - - - - -
जुल्फे मगरूर इतनी हो जायगी दिल को तड़पायेंगी जी को तरसायेंगी
ये कर देंगी दिवाना कोई इनको न बतलाना इन्हें - - - -
सारे इनकी शिकायत करते फिर भी इनसे मोहब्बत करते हैं
ये क्या जादू है जाने फिर चाक गरेबां दिवानेइन्हे - - - - - - - - -

=

[illegible] पर्दा

राम कौ छवी नैना न उलझे
उलझे तो उलझे सुलझावे नहीं सुलझे
राम को .... ।

अन्तरा - इन नैनन की मार बुरी है
उलझे तो उलझे सुलझावे नहीं सुलझे
राम को .... ।

		ग+		म+	ध+		नी+		रे+	ग+				
0	0	0	मा	पा	0	0	सां	रे	0	0	0	0	0	0

(1) राम क रे+ छवी नै ना
पा धा * *धा मा *मा गा * ×2 मा धा *

न उल+ झे
नी * सां रे * गा * नी * -

(2) उल झे तो उलझे सुल झा वे
नी * रे ×2 गा * ×2 रे * सा नी *

धा न हीं सुल + झे
धा * नी * सा रे गा * नी *

नोट - + यहाँ पर लौटता गमक है अर्थात यहाँ पर उंगलियाँ झटके से इतनी लचकावें कि प्रत्येक पर्दा तीन बार बज जावे।

दोरास्ते

छुप गये नजारे ओय क्या बात हो गयी

तूने काजल लगाया दिन में रात हो गयी

मिल नैनों से नैना ओय क्या बात हो गयी तूने ——

दिल ने दिल पुकारा मुलाकात हो गयी

कल नहीं आना मुझे न बुलाना कि मारता जमाना

तेरे होठों पे रात पे बहाना था गोरी तुमको तो आज नहीं आना था

तू चली आई दुहाई ओय क्या बात हो गयी त

मैंने छोड़ा जमाना तेरे साथ हो गयी

अम्बुआ की डाली पे गाये मतवाली कोयलिया काली निराली

सावन आने का कुछ मतलब होगा

बादल छाने का कोई सबब होगा

रिमझिम छाये घटाये ओय क्या बात हो गयी

तेरी चुनरी लहराई बरसात हो गयी

छोड़ नाना चैयाँ पहुँ तेरी पैयाँ कि तोरी की बतियाँ

एक वह दिन था मिलतीं नथी अँखियाँ

एक यह दिन है तू जागे सारी 2 रतिया

बन गयी तेरी चकोरी ओय क्या बात हो गयी

जिसका डर था बेदर्दी वही बात हो गयी तूने ——————

अन्तरा इन न ... बी मार

धा * x2 नी * रे x2 गा * रे * x2

कु री + है

गा * गा * रे * सा नी *

=

बिंदियां चमकेगी चूड़ी खनकेगी, नींद उड़े तो उड़ जाये
कजरा बहकेगा गजरा महकेगा माही तू आये तो यह कुल जाये
मैं तो माना हुआ तू दिवाना जुल्म तेरे साथ हुआ
मैं कहां ले जाऊं अपनी लोग लगाकर।

दो रंग दुनिया के और दो रस्ते, दो रूप जीवन के जीने के वास्ते
इक रास्ता मन्दिर को जाये इक मैखाने को
सोच समझ के पांव रखे समझा दे हर दिवाने को
रस्ता भूल न जाये राही धोखा न खाये
इक जाये मन्दिर को जाय इक जाये मैखाने को
सोच समझ कर पैर रखे इक है ऐसे लोग
जो औरों के खातिर अपना खून बहाते हैं,
कोई फूल खिलाये कोई कांटे बिछाये दुनिया के दो रास्ते — — . . . . .

=

खिलौना

खिलौना जानकर तुम तो मेरा दिल तोड़ जाते हो खिलौना
मुझे इस हाल में किसके सहारे छोड़ जाते हो
खुदा का वास्ता देकर बुलालूँ दूर हूँ लेकिन
तुम्हारा रास्ता मैं रोक लूँ मजबूर हूँ लेकिन
कि चल भी नहीं सकता और तुम छोड़ जाते हो
मिला तुमसे नहीं कोई मगर अफसोस थोड़ा है
कि जिस गम ने मेरा दामन बड़ी मुश्किल से छोड़ा
उसी गम से मेरा फिर आज रिश्ता जोड़ जाते हो
मेरे दिल से न लो बदला जमाने भर की बातों का
ठहर जाओ सुनो मेहमान हूँ मैं चन्द रातों का
चले जाना अभी से किस लिये मुँह मोड़ जाते हो

गोपी

सुख के सब साथी दुख में न कोई
मेरे राम तेरा नाम इक सांचा दूजा न कोई
जीवन आनी जानी छाया झूठी माया झूठी काया
फिर काहे को सारी उमरिया पाप की गठरी ढोई
ना कुछ तेरा ना कुछ मेरा ये जग जोगी वाला फेरा
राजा हो या रंक सभी का अंत एक सा होई
बाहर की तू माटी फाके मन के भीतर क्यों न खोजे

ध्वनि पहाड़ी - ताल तीन - वक्र दिन - लय धीमी - सम की जगह "क्यों कर) तर्ज " शगल गर ढूंढते हो दिल के बहलाने के लिये" —

गज़ल

~~शर्म~~ शर्म थी आँख में परदे से निकलते क्यों कर।
न सही शर्म नज़ाकत से वह चलते क्यों कर॥

न नज़ाकत सही वह मेंहदी लगाये होंगे।
फिर वह तलवे से दिलेज़ार को मलते क्यों कर॥

न सही मेंहदी किसी ग़ैर से वादा होगा।
सादिकुल कौल थे वादे को बदलते क्यों कर॥

न सही वादा बड़े शान पर लड़की होंगी
बोझ लेकर के वह चलते तो सँभलते क्यों कर॥

पहला सप्तक द्वितीय सप्तक

०	०	०	०	पा	धा	नी	सा	रे	गा	०	०	०	०

स्थायी	शर्म थी आँख में पर दे से निक ली गा×3 रे×2 सा×3 नी + धा पा×2+धा ते क यों कर दूसरे मिसरे नी+ .. सा ~~सा~~नी धा·+ | गायन को भी लव इसी तर्ज पर बनाओ।
अन्तरा	न सही. मेंह दी किसी ई ग़ैर से वा दा हो ~~ग~~गा आ आ ·पा×3+ धा·+ सा×3 रे· ~~रे~~ सा×3 रे गा· रे· सा नी+ धा× ॥

पहिले सवैये इसी तर्ज पर करो॥

मस्तीमें हमारी भी जो परवा नहीं करते।
हम उनकी खुशीके लिये क्या क्या नहीं करते॥
हक़ उनको ये हासिल है हुकूमत करें हम पर।
हम उनकी गुलामी कभी दावा नहीं करते॥
हम उनको मानते हैं जो हर बातमें हमसे
लड़के भी पह कहते हैं कि बेजा नहीं करते॥
दुनियाँ के जो पर्दे से भी, बेपर्दा हैं उनसे
हम पर्दानशीं होके भी पर्दा नहीं करते॥
हगोविन्द को मजबूर किन्हाते हैं जो हमको।
हम उनकी नज़र-कैदसे निकला नहीं करते॥

ध्वनि पहाड़ी - ताल कौवाली - लय दर्मियानी - वक्त दिनका
तर्ज - चली आती हैं नज़रें घूमसे दवार कातिल में॥

गजल

बुतानेमा हवश उजड़ी हुई मञ्ज़िल में रहते हैं।
कि जिसकी गम खाते हैं उसीके दिलमें रहते हैं।
मुहब्बतमें मज़ा है छेड़ का लेकिन मजे की ले-
हजारों लुत्फ हरइक शिकवये बातिलमें रहते हैं।
हजारों हसरतें वह हैं कि रोके से नहीं रुकती

वहुत अनजान ऐसे हैं कि दिलके दिलमें रहते हैं
खुदा रक्खे मुहब्बतको किये आबाद दोनो घर
मैं उनके दिलमें रहता हूं वह मेरे दिलमें रहते हैं।
कोई नामोनिशां पूछे तो ऐ क़ासिद बतादेना
तखल्लुस दाग़ है वह आशिक़ों के दिलमें रहते हैं.

दर्मियानी सप्तक

द्वितीय सप्तक

सा	रे	गा	मा	पा	धा	नी	सा	रे	गा	०	०	०	०

बुतानेमा ह व रा प ज डी हुई... ई मन
सां x ४. .नी .सां,रे सा नी धा. पा. मा गा सा

स्थायी
जिल में र हते... ए हैं
रे सा रे गा २ रे सा..

अन्तरा
मुहब त में म जाई... ए के ज़ुका लो
पा x ३ धा सां नी धा x २ नी सां पा x २ धा
किन म जे स की. हो ओ ओ ओ ओ
सां x २. रे सा गा रे सा ..नी धा पा धा

गजल

मिला है मुझको किस्मत से खयाले हिन्द मस्ताना।
पिया करता हूँ हरदम श्याम की उल्फत का पैमाना॥
मजा है बेखुदी का यह कि मैं दुनियाँ में हूँ लेकिन।
न जाना मैंने दुनियाँ को न दुनियाँ ने मुझे जाना॥
मुझे है सिर्फ अपने यार के दीदार से मतलब।
यही मस्जिद यही मन्दिर है यही काबा या बुतखाना॥
हमेशा वस्ल ए रिश्ता चाहता हूँ प्यारे मोहन से।
मैं उनको दिलरुबा कहूँ वो कहें मुझको दीवाना।
कहीं है बिन्दु इसमें मोम दिल मोती के दाने हैं
किसी की आग में पड़कर पिघल जाता है हर दाना॥

गजल

जो करुणा कर तुम्हारा ब्रज में फिर अवतार हो जाये, तो भक्तों का चमन उजड़ा हुआ गुलजार हो जाये॥
अन्तरा - गरीबों को उठा लो साँवले गए अपने हाथों से। तो इसमें शक नहीं दीनों का बेड़ा पार हो जाये॥
तड़प ... लुटा कर दिल जो बैठे हैं वो रो रो कर ये कहते हैं
किसी सूरत से सुन्दर श्याम का दीदार हो जाये।
बजा दो रस भरी अनुराग की वह बाँसुरी अपनी
कि जिसकी तान की हर तन में पैदा तार हो जाये॥
पड़ी भवसिन्धु में दीनों के हैं दृग 'बिन्दु' की नइया।
कन्हैया तुम सहारा दो तो बेड़ा पार हो जाये॥

राग भैरवी ताल तीन

भज मन राम चरण सुखदाई ॥ ध्रु० ॥
जिहि चरननसे निकसी सुरसरी शंकर जटा समाई ।
जटा शंकरी नाम परयो है, त्रिभुवन तारन आई ॥
जिन चरनन की चरनपादुका भरत रह्यो लव लाई ॥
सोई चरन केवट धोईलीने तब हरिनाव चढ़ाई ॥
सोई चरन संतन जन सेवत सदा रहत सुखदाई ॥
सोई चरन गौतम ऋषि नारी परसि परम पद पाई
दण्डकवन प्रभु पावन कीन्हो ऋषियन त्रास मिटाई । ।
सोई प्रभु त्रिलोक के स्वामी कनक मृगा संग धाई ॥
कपि सुग्रीव बन्धु भय व्याकुल, तिन जय-छत्र फिराई
रिपु को अनुज विभीषण निशिचर परसत लंका पाई
सिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक शेष सहस मुख गाई
तुलसी दास मारुत सुत की प्रभु, निज मुख करत बड़ाई ।

भैरवी

कान्ह नित नये उरहना लावे ।।

दूधदही खाकाहु की कमी नहिं, नाहक धूम मचावे
तनक दही के कारन मोहन, माखनचोर कहावे ।
सूरश्याम को कछु नहीं मैय्या बांवरा तिवावे ।।

भैरवी

लाग गई तब लाज कहा री।
जो दृग लागे नन्द नन्दन सों, औरन सों कि काजकहारी ।
भर भर पिये प्रेम रस प्याले औरहि अमल को स्वाद कहारी ।।
ब्रजनिधि व्रज रस चाख्यौ या जग आगे राज कहारी ।।

भैरवी

छवि आछीवनी बनवारी की ।
मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल, अलकां घुँघरवारी की ।।
मृदु मुसकान आन नयननकी लो बाणे गिरिधारी की।
कृष्णदास युगल जोरी प तन मन धन सब वारी की

भैरवी

माटी खुदी करेंदी यार
माटी जोड़ा माटी घोड़ा माटी दा असवार ।।
माटी माटी नुं मारन लागी, माटी दे हथियार ।।
जिस माटी पर बहुती माटी तिस माटी हंकार ।।

माटी बाग बगीचा माटी माटी दी गुलजार ।।
माटी माटी नु देखन आई माटी दी बहार ।।
हस खेल फिर माटी होई पौंदी पाँव पसार ।।
बुल्लाशाह बुझारत बुझी लाह सिरों भों मार ।।

भैरवी

अब मैं कैसी करूँ री बीर ।
हौं तो धनी चाहूँ न काहू कौ सुख, मन तो पातनधी ।।
जो घायल उन नयन बानके सो जानत यह पीर ।।
नारायण लागयो बावरी सुन्दर श्याम शरीर ।।

भैरवी

जानकी जीवन की बलि जैहौं ।
चित कहे राम सीय पद परिहरि अब न कहूँ चलि जैहौं ।।
उपजी उर प्रतीति सपने सुख, ही पद त्रिभुवन पैहौं ।।
मन समेत या तनके बासिन्ह यही सिखावन दैहौं ।।
श्रवननि और कथा नहिं सुनिहौं रसना और न गैहौं ।।
रोकिहौं नयन बिलोकत औरहिं शीश ईश पद नैहौं ।।
नातें नेह राम सों करि सब नातो नेह बहैहौं
यह छर भार ताहि तुलसी जग जाको दास कहैहौं ।।

मीरी

हरी से लाग रह्यो रे माई। मेरी बिगड़ी बात बनि जाई॥
रंका तार्यो बाँका तार्यो, तार्यो सधन कसाई॥
सुआ पढ़ावत गणिका तारी तारी है मीरा बाई॥
दौलत दुनियाँ माल खजाना बधिया बैल चराई॥
जबही काल कर डंका बाजै, खोज खबर नहीं पाई॥
ऐसी भक्ति को घट भीतर, छोड़ कपट चतुराई॥
सेवा बन्दगी औ अधीनता सहज मिलैं रघुराई॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो सदन बात बताई॥
यह दुनियाँ दिन चार दिहाड़े, रहो राम लव लाई॥

आली री मेरे नयनन बान पड़ी॥
चित्त चढ़ी मेरे माधुरी मूरति, उर बिच आन अड़ी॥
कबकी ठाढ़ी पन्थ निहारूँ अपने भवन खड़ी॥
कैसे प्रान पिया बिन राखूँ, जीवन मूल जड़ी॥
मीरा गिरधर हाथ बिकानी, लोक कहैं बिगड़ी॥

पतिराखो मोरी श्याम बिहारी।

बनवारी श्री गिरिधारी श्री कृष्ण मुरारी ॥

शूरसमूह भूषण सब बैठे, भीष्म द्रोण कर्ण व्रत धारी।

कहि न सकै कोउ बात परस्पर, इन पतितन मेरी अपत बिचारी।

बलविहीन पाण्डव सुत डोलें भीम गदा कर सों महि डारी।

रहीं न पैज प्रबल पारथ की, जब ले धारणी धर्मसुत हारी।

लाक्षागृह में जरत उबार्यो, नाथ तुम्हें छोड़ कोरि हौं पुकारी।

अकलंगनाथ नाहीं कछु बिगर्यो, उघरत माथ अनाथ पुकारी।

छूटत लाज दास-दासिनि की, बहुरि आप करुणी हौं मुरारी।

सूर के स्वामी वेगि दामोदर देव, विपिन पखतें हौं देव उघारी।

उजले तन पे मान किया और मन की मैल न धोई

हे राम चन्द्र कह गये सिया से ऐसा कलियुग आयेगा

हंस चुगेगा दाना दुनका कौआ मोती खायेगा

भगवान कलियुग में धर्म कर्म भागेगा

धर्म भी होगा कर्म भी होगा परन्तु शर्म नहीं होगी

बात में मात पिता को बेटा आंख दिखायेगा

राजा और प्रजा में दोनों में होगी निशदिन खींचातानी

कदम कदम पर करेंगे दोनों अपनी मनमानी

राम के होंगे लाखों मैं तो वहीं ले जायेगा हे रामचन्द्र ...

सिंहों को सपा कलयुग काला धन और काले मन होंगे

चोर उचक्के नगर सेठ और प्रभु भक्त निर्धन होंगे

जो होगा लोभी और भोगी वो जोगी कहलायेगा

मन्दिर सूना सूना होगा भरी रहेगी मधुशाला

पिता के संग संग भरी सभा में नाचेगी घर की बाला

कैसा कन्यादान पिता ही कन्या का धन खायेगा

तुम्हे और क्या दूँ मै दिल के शिवा तुमको हमारी उमर लग जाये

मुरादे हो पूरी राजा हर तमन्ना

~~मोहब्बत~~ मोहब्बत के दुनिया के तुम चांद बनना

बहारों से ये हसना हसाना, खुशी मे हमारी भी आवाज सुनना

मेरी जिन्दगी मे कोई गम न आये

तुमको हमारी उमर लग जाये

मुझे जो खुशी है तुम्हे क्या बताऊ

भला दिल की धड़कन को कैसे छिपाऊ

कहीं हो न जाऊं खुशी से मै पागल

तुम्हे देखकर और भी मुस्कराऊ

खुदा दिल जलो की नजर पे बचाये

तुमको हमारी उमर लग जाये

छोटा भाई

माँ मुझे आंचल में छुपाले गले से लगाले कि और मेरा कोई नहीं

भूल मेरी छोटी सी भूल जाओ माता। रुठे कोई अपनो से रूठ नहीं जाता

रूठ गया हूँ तो फिर से मनाले। गले से लगाले — — — — — —

न तो यहाँ अंधियार न कोई ज्योति है, न तो यहां जीवन है न तो यहां मौत

तूने किया है तुझको किसके हवाले। गले से लगाले — — — — —

— भरोसा

इस भरी दुनिया में कोई भी हमारा न हुआ

गैर तो गैर थे अपनों का सहारा न हुआ, इस भरी - - - - - - - - - - - -

लोग रो रो के भी इस दुनिया में जी लेते हैं,

इक हम हैं कि हम से भी तो गुजारा न हुआ, इस भरी

इक मोहब्बत के सिवा और न कुछ मांगा था

क्या ये भी जमाने को गवारा न हुआ — इस भरी दुनिया - — - - - - -

आसमां कितने सितारे हैं तेरी महफिल में

अपनी तकदीर का कोई भी सितारा न हुआ. इस भरी दुनिया — — — - - -

=

म खानदान

तुम्ही मेरे मन्दिर तुम्ही मेरी पूजा तुम्ही देवता हो, तुम्ही देवता हो

कोई मेरे नजरो से देखे तो समझे कि तुम मेरे क्या हो कि तुम मेरे क्या हो, तुम्ही

तुम्ही मेरे माथे की बिंदिया की झिलमिल, तुम्ही मेरे हाथो के गजरो की मंजिल

मुझे देख कर तुम जरा मुस्करादो, नही तो मै समझुगी मुझसे खफा हो, तुम्ही

तुम्ही एक छोटी सी माटी की गुड़िया, तुम्ही प्राण मेरे तुम्ही आत्मा हो, तुम्ही — ...

बहुत रात बीती चलो मै सुला दूं पवन छेड़े सरगम लोरी सुनादू,

तुम्हे देखकर ख्याल आरहा है, कि जैसे फरिस्ता कोई सोरहा है, तुम्ही मे —

जिक्र होता है जब कयामत का, तेरी जलवों की बात होती,

तु जो चाहे तो दिन निकलता है, तु जो चाहे तो रात होती,

तुमको देखा है मेरी नजरों ने, तेरी तारिफ पे मगर कैसे

कि बने ये नजर जुबां कैसे, कि ये बने जुबा नजर कैसे

न जुबां दिखाई देता है, न निगाहो से बात होती है, जिक्र होता ——— .

तु निगाहो से जो पिलाये तो, अश्क भी पीने वाले पीते है,

यु तो जीने को तो तेरे बिन भी, इस जमाने मे लोग जीते है,

जिन्दगी पर उसी को कहते है जिसमें दाग भी नही होता है, जिक्र — . ———...

॥ राग कान्हरा ॥

परमधन राधे नाम अधार ।
जाहि श्याम मुरली में टेरत, सुमिरत बारंबार ॥
यन्त्र मन्त्र औ वेदतन्त्र में, सबै तार को तार ॥
श्री शुक प्रगट कियो नहिं यातैं, जानि सार को सार ॥
कोटिन रूप धरे नन्दनन्दन, तऊ न पायो पार ॥
व्यासदास अब प्रगट बखानत, डारि भार में भार ॥

राग कान्हरा

प्रीति की रीति रँगीलोई जानै ।
यद्यपि सकल लोक चूड़ामणी, दीन अपन पौ मानै ॥
यमुना पुलिन निकुञ्ज भवन में, मान मानिनी ठानै ॥
निकट नवीन कोटि कामिनि कुल, धीरज मनहि न आनै ॥
नस्वर नेह चपल मधुकर ज्यों, आन आन से बानै ॥
जयश्री हित हरिवंश चतुर सोई, लालहि छाँड मेंड पहिचानै ॥

राग कान्हरा

देखन दे मोरी बैरन पलकें ।
निरख स्वरूप मदन मोहन को, बीच परत बज्जारसी सलकें ॥
आगे आगे धेनू, पाछे नन्दनन्दन, गोचारण रज मण्डित अलकें ॥
कुण्डल कर्ण कोटि रवि परसे, परत कपोलन में कछु झलकें ॥

ऐसो स्वरूप निरख मेरी सजनी, बारी कियो इसपूत कमल के ॥
नन्ददास जनकी यह गति, तरफत मीन भाव बिन जल के ॥

राग कान्हरा

पौढ़े श्याम जननि गुनगावत ।
आजु गयो मेरे गाय चरावन, यह कहि मन हुलसावत ॥
कौन पुण्य तपते मैं पायो, ऐसो सुन्दर बाल ॥
हर्ष हर्ष के देत सबन को, सूर सुमन की माल ॥

राग कान्हरा

कैसे रास रसहि मैं गाऊँ ।
श्री राधिका श्याम की प्यारी, तुम्हरी कृपा बास ब्रज पाऊँ ।
आन देव सपने नहि जानूँ, दम्पति को शिर नाऊँ ॥
भजन प्रताप चरन महि माते, गुरु की कृपा दिखाऊँ ॥
वृन्दावन वीथिन यमुना तट, आनन्द कुटी छवाऊँ ॥
सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन को, बेद-विमल-यश गाऊँ ॥

राग कान्हरा

श्याम भुजा की सुन्दरताई ॥
चन्दन खौर अनूपम राजत, सो छवि कही न जाई ॥
अति विशाल जानू लौं परसत, इक उपमा मन आई ॥

मनो भुजङ्ग गगन सों उतर्यो, अधमुख रह्यो झुलाई ॥
रत्नजड़ित पहुँची कर राजत, अंगुरी सुन्दर भारी ॥
सूर मनो फणि शिर मणि सोहत फणफण की छवि न्यारी ॥

राग कान्हरा

माधव केवल प्रेम पियारा ।
गुरुता अगुरा कछू मानत नाहीं, जान लेहु जो जानन हारा ॥
व्याधाचर्ण अवस्था ध्रुव की, गजके शास्त्र कौन विचारा ॥
भक्त विदुर दासीसुत कहिये, उग्रसेन कछु बल नहिं धारा ॥
सुन्दर रूप नहीं कुब्जा को, निर्धन मीत सुदामा कू तारा ॥
इतनौं बाणि लक्यौ सब हरि को, मोपै पायौ जातन पारा ॥
सुनि प्रभु सुयश शरण हैं आयो, मोसे दीनन को रखवारा ॥
भक्त रामप्रवेश गिन्यौं कोना, कहिये दलन दास हमारा ॥

राग कान्हरा

कहाँ करे मुदरिया डारी ।
मैं बलि जाउँ बताय किशोरी, तैं कबते न निहारी ॥
आवत हैं भुज अंसन रहो बैस बिहारी ॥
जो देखी तो कहिये मोते, मुदित होत कह भारी ॥
चोरी चपल लगावत मोंको, न्याव करो तुम प्यारी ॥
वृन्दावन हित रूप दाम पड़ी, लाल फेंट जब झारी ॥

राग कान्हरा

ऐसी कब करिहौ गोपाल ।
मनसानाथ मनोरथदाता, हो प्रभु दीन दयाल ॥
चित चरनन निरन्तर अनुरत, रसना चरित रसाल ॥
लोचन सजल प्रेम पुलकित तनु, कर कंजन दल माल ॥
ऐसी रहत लिखत छिन छिन यम, अपनो भायो भाल ॥
सूर सुयश रागी न डरत मन, सुन यातना कराल ॥

॥ राग कान्हरा ॥

पूतना विष दे अमृत पायो ।
जो कछु देवत सो फल पैयत, नाहक वेदन गायो ॥
शत यज्ञ राजा बलि कीन्हो, बांध पताल पठायो ॥
लख गऊ राजा नृग दीनी, गिरगट रूप करायो ॥
रंक जनम के मित्र सुदामा, कुन्चन धाम बनायो ॥
सूरदास तेरी अद्भुत लीला, वेद नेत कह गायो ॥

रागकान्हरा

आज नीकी बनी श्री राधिका नागरि ।
ब्रजयुवति यूथमें रूप औ चतुरई शील सिंगार गुण सबन में आगरी ॥
कमल दक्षिण भुजा वाम भुज अंश सखि गावती सरस मिल मधुर सुर रागरी ॥
सकल विद्या विदित रहस हरिवंश हित मिलत नव कुञ्जमें

श्यामबड़ भागी ॥

राग कान्हरा

ठुमुकि चलत रामचन्द्र बाजत पैजनियां।
किलकत उठि चलत धाय परत भूमि लटपटाय, धाय मोद गोद लेत दशरथ की रानियाँ। अञ्चल रज अङ्ग झार विविध भाँति सो दुलार, तन मन धन वारि देत कहत मृदु बचानियां॥ मोदक मेवा रसाल, मन भावत लेउ लाल, और लेउ रुचिर पान कञ्चन सन मुनियां। आनन्द सज कम्बु कण्ठ ग्रीवा छवि रुचिर रेख चाच कुटिल कमल बदन मन्द सों हँसनियाँ। विद्रुम सो अधर ललित बोलत प्रिय मधुर बचन नाशा अति सुभग बीच लटकत लटकनियाँ। अद्भुत छवि अति अपार को कवि नहिं वाकें पार कहन सके शेष शिवहिं सरस्वती रसनियाँ। तुलसी दास रूप रङ्ग परत को दिये कहा रघुवर की छवि समान रघुवर छवि बानियाँ।

राग कान्हरा

ठुमुकु, ठुमुक चलत चाल जनकनन्दनी।
मधुर बचन तोतरे त्रय ताप मोचनी॥
सोहत नव नील बसन मन्द हास रुचिर दशन,
झलकत अमोल सकल देव वन्दनी॥

नुपुर पग बजत मानो साम वेद कृत गान मधुर चंद्र रुचिर नाद उर अनन्दनी ॥ जगत मात सखिन सङ्ग बिहरत बहु भाँत रङ्ग अग्रदास निरखत छवि भव निकन्दनी ॥

राग कान्हरा

देखोरी छबि राम वदन की ।
कोटि कोटि दामिनि दर्पण द्युति, निंदत कान्ति कपोल रदन की।
नासा मृदु मुसुकान माधुरी, मन्द करी अति घुमड़ मदन की ॥
फब रह्यो शीश मुकुट अलकन पर, मनो फाँस दृग मीन फसन की ॥
चोरत चित भृकुटी दृग शोभा, कुण्डल झलकत रवि चन्दन की ॥
राम सखि छवि कहि न जात अब, सुधि न रहत लख वदन वसन की ॥

राग कान्हरा

आज वंशीवट बरसत रङ्ग ।
यमुना तीर समीर सुहावन, बोलत विविध विहङ्ग ॥
कीरति कुमरि लाल नन्द जी के, झूल रहे इक रङ्ग ॥
रूप सिन्धु के अङ्ग अङ्ग ते छवि की उठत तरङ्ग ॥
बजत बीन ताऊस सरंगी, वंशी झाँझ मृदङ्ग ॥
नारायण गावत मिल सजनी, हियमें बढ़त उमंग ॥

Page 419. Big book.

ध्वनि देश - ताल क़ौवाली - लय दर्मियानी वक़्त १० बजे रात तर्ज - " मुनव्वर शाह ज़ादा का शिफ़ा पाना मुबारक है" ॥

स्था. यह जल्सा तुमको सालाना मुबारक हो मुबारक हो
मिले हैं ऐश बेगाना मुबारक हो मुबारक हो
अन्त. सुशोभित आपने जो आज मन्दिर को किया साहब
करम हम पर यह फ़र्माना मुबारक हो मुबारक हो ॥

पहला सप्तक							दूसरा सप्तक						
०	रे	गा	मा	पा	धा	नी	सां	रें	गां		०	०	००

यह जल्सा तुम को सा ला ना मु बा र
धा × ४ पा ध्या नी सां नी धा पा
क हो मु ब आ र क हो
म पा ध्या पा मा गा रे .....

सुशोभित आ प ने ज ओ आ ज म न दि र
सां × ४ नी धा×२ नी सां प×२ ध्या सां
कि य आ स आ ह ब
रें गा रें सां नी धा

गत पृष्ठ के गज़ल के तर्ज़ पर नीचे लिखे दो बिन्दु जी के पद्य :— Page 36

हमारी बार तुम निकले जो मनमोहन सनम झूठे ।
तो सरदारी के वृन्दा नाम सब को देंगे हम झूठे ॥
जो कदमों ने तुम्हारे तरु शिला, केवट उधारे थे
तो अब कलिकाल में क्यों हो गये साबित कदम झूठे
पतित से पतित पावन का मिला क्या खूब जोड़ा है
न तुम सच्चों में कम सच्चे न हम झूठों में कम झूठे ॥
पढ़ा है हमने ग्रन्थों में कि तुम अधमों के प्रेमी हो
बता दो ग्रन्थ झूठे हैं, कि तुम झूठे कि हम झूठे ॥
जो करुणा सिन्धु कर दो 'बिन्दु' पर करुणा नज़र कुछ भी
कि झगड़ा ही मिट जाये न तुम झूठे न हम झूठे ॥

=

दिखा देते हो जब रुख जब साँवले साकार थोड़ा सा
तो भर लेती हैं आँखें शर्बते दीदार थोड़ा सा ॥
ये खिल जाते हैं जब आँसू के कतरे पुष्प बन बन कर
खिला देते हैं दिल में प्रेम का गुलज़ार थोड़ा सा ।
ज़रा मस्ती के झोंकों में हिलीं आँखें तो हिलते ही
छलक पड़ता है प्यालों से तुम्हारा प्यार थोड़ा सा ॥

चले बिकने पे अश्कों के गुहर मुझसे ये कह कह कर।
कि अब देखेंगे कुफ़्फ़ागार का बाज़ार थोड़ा सा॥
गिरे दृग बिन्दु पृथ्वी पर तो बनकर हर्फ़ ये बोले।
पतित पावन से लिखवाते हैं इकरार थोड़ा सा

मैं आप अपनी तलाश में हूँ मेरा कोई रहनुमा नहीं
वो क्या दिखायेंगे राह मुझको जिन्हें खुद अपना पता नहीं।
सकेरो सजदेगाहें हैं मुझको तू मेरे सिजदे की लाज रखना
ये सर तेरे आस्ताँ से पहले किसी के आगे झुका नहीं-
~~मैं~~ बहुत दिनों से मैं सुन रहा था सज़ा वो देते हैं जब खता हो
मुझे तो ऐसी सज़ा मिली है, कि मेरी कोई खता नहीं है।
ये उनके मन्दिर ये उनके मस्जिद ये गर पा[illegible] को सिजदेगाह है
अगर ये उनके खुदा का
अगर ये उनके खुदा का घर है तो ~~[illegible] खुदा~~ का घर
तो क्या इनमें खुदा नहीं है

-आराधना-

कोरा कागज था ये मन मेरा लिख लिया है नाम इसपे तेरा

सूना आंगन था जीवन मेरा बस गया है प्यार इसमें तेरा

टूट न जाये सपने मैं डरता हूँ नित सपने मैं तुम्हें देखा करता हूँ

नैना कजरारे मतवाले पिया कोरे

खाली दर्पण सा ये मन मेरा बस गया है रूप इसमें तेरा,

कोरा . . . .

चैन गंवाया मैंने निंदिया गंवाई, सारी सारी रात जागू तेरी दुहाई

कहूं क्या मैं आगे नेहा लागे नैना लागे, कोई दुश्मन सा ये मन मेरा

बन गया है मीत जाने तेरा, कोरा - - - - . . . .

बागों में फूलों के खिलने से पहले, तेरे मेरे नैना से मिलने से पहले

कहां थी बातें मुस्काते ऐसी बातें

टूटा सा तारा सा ये मन मेरा, बन गया है चांद होके तेरा,

गीत

मेरी आस रही है हे भगवान तुम्हें अपनी कहानी सुनाया करूं

राग

लगन नहिं छूटे हरी बीर।
ताने देहु नाम और चाहे कोटि करो तदबीर ।
छिनमें करत चतुर को बौरा, नृपको करत फकीर ॥
नारायण भव कठिन है बचिबो बिंधे हिये हगतीर ॥

सां नि ध प मप गम प परे गरे सा

राग इमन

जयजय रसिक रवनी-रवन
रूप गुण, लावण्य, प्रभुता, प्रेम पूरन भवन ॥
विपति जग को मानवे को, तुम बिना कहु कवन ॥
हरहु मनकी मलिनता, व्यापे न माया - पवन ॥
विषयरस इन्द्री-अजीरन, अति करावहु वमन ॥
खोलिये हिय के नयन, दरशौ मुखवदन अनन ॥
चतुर चिन्तामणि दयानिधि, दुसह दारिद दवन ॥
मेटिये भगवत व्यथा हँसि, भेटिये ताजि भवन ॥

नीरा अग्रवाल राग इमन प्रतिमा अग्रवाल
६ अ नीरा अग्रवाल ५ अ

जावतम दूरियां सबजीकौ।
नख़योदर्ष वारिधि लौं सजनी, बदन इन्दु लखि पीको
सचु पायो अतिनैन-चकोरनि बन सुलोम गन हीको॥
वृन्दावन प्रभु उहडहो कीनो, बदन कुमुद सम नीको॥

राग इमन

प्यारी जू मोतनहुँ टुक हेरो।
श्री वन द्रुमन लतनके नीचे, रसमय चहुँ गान गुण तेरो।
आन न जानों अन न मानों तू ही कृपापद साधनमेरो॥
ललित माधुरी आश पुरावो अवजिन करो हहा अवसेरो॥

तुम्हीं मेरे मन्दिर तुम्हीं मेरी पूजा
तुम्ही देवता हो, तुम्ही देवता हो

गीत ६

मेरे गीत में दर्द हो जाता है पर
उसे आज तुमको सुनाकर रहूंगा मैं
मेरे प्रासाद व प्रासाद जो कसक है
उसे आज तुमको दिखाकर रहूंगा मैं
स्वजन और मातपिता सब तुम्ही हो
तुम्हीने दिया है जनम इस जगत में
अतः अब तुम्हारे ही सन्मुख तुम्हारी
सभी बात तुमको बताकर रहूंगा मैं
कहां तीन कब थी कि मुझको जनम दो
कहां मैं ने कब आ यहां भेज तुम दो,
सृष्टि सृजन कर तुम्ही सब हो कैसे
तो ये पहेली बुझाकर रहूंगा मैं---
जहां तुमने भेजा वहीं पर गया मैं
जहां जो कराया सो करता गया मैं,
तो फिर दाबें देते हो मालिक क्यों मुझको
ये अन्याय तुमसे कराकर रहूंगा मैं,
सभी योनियां सब बनाई हैं तुमने
और आज्ञा के बन्धन में बांधा है तुमने
नहीं एक तिनका हिलता भी बिन तेरी इच्छा,
तो दोषी तुम्हीको बताकर रहूंगा मैं

श्री केदार

यह राग कल्याण थाट का है। इस राग के आरोह में ऋषभ व गान्धार वर्ज होते हैं। व अवरोह में गान्धार वर्ज है। जो वक्रत्व से मध्यम के साथ आते हैं। इस वास्ते इसकी जाति औडव षाडव होती है। इस राग में दोनों मध्यम उपयोग में आते हैं कभी कभी कोमल निषाद स्वर का भी उपयोग किया जाता है। इस राग का वादी स्वर मध्यम है व संवादी स्वर षड्ज है। यह राग रात्रि के पहले प्रहर में गाया जाता है

राग का आरोह तथा अवरोह स्वरूप

सा म, म प, धप नि ध, सां

सां नि ध प, म, ग म रे सा

राग वाचक मुख्य स्वर

सा म, म प, ध प म, पम, रे सा

गान – राग केदार

(ताल दादरा)

दीन बन्धु दीना नाथ नन्द के बिहारी तुम ॥१॥

राम होय रावण मारयो, कृष्ण होय कंस पछारयो

द्रौपदी की लाज राखी, कृष्ण हो मुरारी तुम ॥२॥

ये शुभ और अशुभ सब कर तुमको अर्पिता।
तुम्हारा हो तुमको किया अब समर्पित।
जैसे कोई सम्पीत तुम्हारे न चाहिये
तुम्हारा हो प्यारे कि बनकर रहूंगा मेरे —
नहीं हमसे होगी कोई साधना अब
शरण में कमल को पड़ी रहने दो अब
मैं हूं य तुम्हारे हो जर कन्हैया।
वरबस हवा कर अब के रहूंगा।
मैं — — — — — — — — — — — — — रहूंगा।

स्थाई

+	—	+	—	०	—
१	२	३	४	५	६
म	म	म	प	ध	प
दि	ऽ	न	बं	ऽ	शुं
ग	म	रे	सा	रे	सा
दि	ऽ	ना	ना	ऽ	थ
म	मं	म	म	म	ग
नं	ऽ	दक	धै	ऽ	वि
प	प	ध	सां	ध	प
हा	ऽ	रि	ऽ	रु	म ॥१॥

अन्तरा

+	—	+	—	०	—
१	२	३	४	५	६
प	प	प	नी	नी	ध
रा	ऽ	म	हीं	ऽ	प
नी	सां	रें	सां	सां	सां
रा	व	ण	मा	ऽ	यो
नी	नी	ध	नी	सां	रें
कु	ऽ	ल	हो	ऽ	य
सां	नी	ध	प	प	प
कं	स	प	हा	ऽ	यो
म	म	म	प	ध	प
है	ऽ	प	दा	ऽ	कौ
ग	म	रे	सा	सा	सा
ला	ऽ	ज	रा	ऽ	रवौ
म	म	म	म	म	ग
कू	ऽ	ला	हो	ऽ	मु
प	प	ध	सां	ध	प
रा	ऽ	री	ऽ	तु	म ॥२॥

तान

3 सा सा मम, पप धप, मम पप, ममरेसा

3 सा सा मम पप धप सां सां धप, ममरे सा,

3 सांनी धप, मप धनी, सांनी धप, ममरेसा

~~४ ममरे पपम धधप~~

४ ममरे, पपम, धधप, सांसांध, रेंरेंसां, धधपप, मपधप ममरेसा

१ सामगप, मधपनी, धसांरेंरें, सांनीधप, मपधप ममरेसा

कृष्ण ... ...

श्याम गात सरोज आनन ललित गति मृदु हास

सूर ऐसे रूप कारण मरत लोचन प्यास ॥

राग केदारा

ऐसे जनम समूह सिराने।

प्राणनाथ रघुनाथ से प्रभु तज सेवत चरण बिराने ॥

जे जड़ जीव कुटिल कपा (?) खल केवल कलिमल साने ॥

सूखत वदन प्रशंसत तिनको हरि ते अधिक करि माने ॥

डी	ऽ	प	ग	[illegible]	[illegible]
ग	म	रे	सा	सा	सा
ला	ऽ	ज	रा	ऽ	खी
म	म	म	म	म	ग
कू	ऽ	धा	दो	ऽ	नु
प	प	च	सां	च	प
रा	ऽ	री	ऽ	डु	म ॥८॥

केदारा राग

प्रिय नवला लाड़िली राधिके ॥

इसी राग का दूसरा भजन

नाहिन रह्यो मन में ठौर
नन्दनन्दन अछत कैसे आनिये उर और ॥
चलत चितवत दिवस जागत स्वप्न सोवत रात
हृदय ते वह श्याम मूरत छिन न इत उत जात
श्याम गात सरोज आनन ललित गति मृदु हास
सूर ऐसे रूप कारण मरत लोचन प्यास ॥

राग केदारा

ऐसे जन्म समूह सिराने ।
प्राणनाथ रघुनाथ से प्रभु तज सेवत चरण बिराने ॥
जे जड़ जीव कुटिल कापालिक केवल कलिमल साने ॥
सूखत वदन प्रशंसत तिनको हरि ते अधिक करि माने ॥

राग केदार

बिलसत प्यारी लाल कुञ्ज रजनी

वदन सो वदन जोरे मदन लड़ावत नुपुर के धुनि किंकिनि वलया बजनी,

पुलकि पुलकि तन आनन्द मगन मन मधुरो वचन श्रवण सुनि सजनी ॥

श्री विठ्ठल विपुल रस रसिक बिहारी बस नव-त्रिया-ललित सुरति जीति-जगती ॥

राग केदार

सब सुख अवधि श्यामा-श्याम ।

नित्यधाम निवास अद्भुत अहनिशा अभिराम ।

महलनी निज टहल में तत्पर सदा सब याम ।

श्री हरी प्रिया अंग संग सेवा पुजवहि मन काम ॥

राग आसावरी

कौन जतन विनती कीजै।

निज आचरन विचार हार हिय मान जान डरिये

जिहि साधन हरि द्रवौ जान जन सो हठ परि हरिये ।।

मेरी आशा यही है हे भगवन तुम्हें अपनी कहानी सुनाया करूं

मेरी इसी में खुशी तुम रूठा करो मैं अकेले में तुमको मनाया करूं

कोई आशिक कहे कोई दिवाना कहे, चाहे पागल सारा जमाना

मेरे रोने पे तुमको जो आये हंसी, तो भी रो रो के तुमको मनाया करूं, मेरी आशा----

क्या चीज है जो सेवा में तेरी; चढ़ जाय श्याम तुम पर मेरी

मैं फूल बना कर दिल अपना, चरणों में तेरे चढ़ाया करूं, मेरी आशा ....

मैं कैसे भुलादूं तेरे नाम को, निज पलकों से झाड़ूं तेरी राह को,

तेरे चरणों की धूल को चन्दन समझ, रोज माथे पे अपने लगाया करूं, मेरी आशा.......

राग खमाच

माधव! मो समान जगमाहीं ॥

राग खमाच

ऐसे राम दीन हितकारी ॥

राग खमाज

प्रीतम! तू मोहि प्रानते प्यारो।
जो तोहि देखि हियो सुख पावत, सो बड़ भागिन वारो।
जो तोको पल भर न निहारूँ दीखत जग अँधियारो।
मोद बढ़ावन के कारन भाँतिनि रूपहि धारो।
नारायण हम दोउ एक हैं फूल सुगन्ध न न्यारो॥

राग खमाच

ए दोउ नृत्यत छवि पावें।
करै करनमें चिबुक चालनमें नइ-नइ गति उपजावें ॥
हँसनि लसनि दशननि की दमकनि चितवन चित्त चुरावें ॥
भृकुटि विलास चपल आयत अति अंखियन भाव नचावें ॥
रीझि रीझि रस भींजि परस्पर प्रेम उमग उमगावें ॥
श्री हरिप्रिया निशङ्क अङ्कमी लै-लै लंक लगावें ॥

राग खमाच

रास में नृत्यत री रसभीने।
प्यारी प्यारो रूप उज्यारे दोउ गलबहियाँ दीने।
थेई-थेई रट घुंघरू उघटहिं परसंपर प्रवीने।
उरप तिरप में तुबर सुलप चर अलग लाग दर लीने।
धुंकर धुं धुंकर अपर अपर अर आं आं अरकत कीने।
श्री हरिप्रिया भोरी भोली अरी न न न ननन नन कीने ॥

राग केदार

कबहुक अम्बा अवसर पाई।
मेरियो सुधि द्यायिबो, कछु करुण कथा चलाइ॥
दीन सब अङ्ग हीन क्षीण मलीन अघी अघाइ॥
नामलै भरो उदर इक प्रभु दासी दास कहाइ॥
बूझिहैं सो है कौन कहिबो, नाम दशा जनाइ॥
सुनत राम कृपालु के मेरी बिगड़िऔ बनि जाइ॥
जानकी जग-जननी जनकी, किये बचन सहाय॥
तरै तुलसीदास भवतव नाथ गुण गण गाय॥

राग केदार

रघुपति निरखि गिद्ध शिर नायो।
कहि के बात सकल सीता की, तनु तजि चरन कमल चित लायो॥
श्री रघुनाथ जानि जन अपनो, अपने कर करी ताहि जरायो॥
सूरदास प्रभु दरश परस करी, हरि के लोक सिधायो॥

राग केदार

देखिवरी नवल नन्दकिशोर।
लकुर सों लपटाइ ठाढ़े, युवति जनमन चोर॥
चारु लोचन हँसि बिलोकनि, देखि कैं चित भोर॥
मोहनी मोहन लगावत, लटकि मुकुट झकोर॥
श्रवण-ध्वनि सुरनाद मोहत, करत हिरदै कोर॥
सूर अङ्ग त्रिभङ्ग सुन्दर छवि निरखि तृण तोर॥

राग केदार

यद्यपि राधिका हरि के सङ्ग।
हावभाव कटाक्ष लोचन करत नाना रङ्ग॥
हृदय व्याकुल धीर नाही, वदन कमल विलास॥
तृषा में जल नाम सुनि ज्यों, अधिक अधिक हि प्यास॥
श्यामरूप अपार इत उत, लोभ पुट विस्तार॥
सूर मिलत नहिं लहत कोऊ, दुहुनि बल अधिकार॥

राग केदार

राधेहिं मिलेहु प्रतीत न आवति।
यद्यपि नाथ विधु बदन बिलोकति, दरशन को सुख पावति
भरि भरि लोचन रूप परम निधि, उरमें आनि दुरावति
बिरह-विकल मति दृष्टि दुहुँ दिशि, सचि सरधा ज्यों धावति।
चितवत चकित रहत चित अन्तर, नैन निमेष न लावति॥
सपनो आहि कि सत्य ईश इहि बुद्धि वितर्क बनावति॥
कबहुँक करत विचार कौन हो को हरि के हिय भावति॥
सूर प्रेम की बात अटपटी ~~मन~~ मन तरंग उपजावति॥

राग केदार

जबतें बिछुरे ~~श्याम~~ कुञ्ज बिहारी।
नीन्द न परे घटे नहि रजनी, व्यथा बिरह ज्वर भारी॥
हौं उठि सखी आँगन ह्वै आई जगमग रही जियारी॥
श्रवणन शब्द सुधाइ सखी री पम चातक द्रुम डारी॥
उरते सखी दूरि करि हारहि, कंकन धरहु उतारी॥
सूरदास प्रभु बिनु अति व्याकुल, करि बहु जतन जुहारी॥

राग केदारो

सखीरी हरि आवें केहि हेत।
वे राजा तुम ग्वाल बुलावत रहै परेखो लेत।
अब शिर छत्र अनूप राजत हैं, मोर पंख नहि मानत॥

सुनि ब्रजराज पीठि दै बैठत, यदुकुल बिरद बुलावत।
द्वारपाल आनि पौरि बिराजत दासी सहस अपार।
गोकुल माइ दुहत दुख गोयो सूर भये एक बार॥

राग केदार

लेहु री लोचनको लाहु।
कुँवर सुन्दर साँवरो लखि, सुमुखि सुन्दर चाहु।
खण्डि हरको दण्ड बाँदे जानु लम्बित बाहु।
रुचिर उर जयमाल राजत देत सुख सब काहु॥
चितै चित हित सहित नख शिख, अंग अंग निबाहु॥
सुकृत निज सिय राम रूप बिरञ्चि मतिहिं सराहु॥
मुदित मन बरवदन शोभा, उदित अधिक उछाहु॥
मनो दूर कलंक कर शशि समर सूद्यो राहु॥
नयन सुखमा अयन हरप सरोज सुन्दरताहु।
बसत तुलसीदास उर पुर जानकी को नाहु॥

तेरे पूजन को भगवान. बना मन मन्दिर आलिशान
किसने जानी तेरी माया किसने भेद तुम्हारा पाया
हारे रिषि मुनिकर ध्यान, बना मन मन्दिर आलीसान

श्रीमान् इंजीनियर महोदय वाटर वर्क्स नगरपालिका,
नवाबगंज गोंडा

सेवा में विनम्र निवेदन है कि प्रार्थी को ज्ञात हुआ है कि आपके नगरपालिका में कुछ टेक्निकल लेबरों की आवश्यकता है।

प्रार्थी ने सिविल मैकेनिकल आई. टी. आई. लखनऊ से जून 1965 में पास किया है, तथा अप्रेन्टिस शिप फर्म में 6 माह की [illegible] उत्तर रेलवे वर्कशाप लखनऊ से प्राप्त किया है।

अतः सेवा में निवेदन है कि प्रार्थी को उपरोक्त जाब [illegible] जरूर दिलाकर [illegible] आपकी बड़ी दया की कृपा होगी।

प्रार्थी :

राग काफी

बैठि तहाँ मिलि गावन लागे ॥
बीरी रवाय रबवाय परस्पर तान मान सुनि अति अनुरागे।
मूर्च्छना रचना श्रुति धारि भये थिर जंगम थावर जागे ॥
'वृन्दावन' प्रभु रीझि अपनापो भूलि गये दम्पति रसपागे ॥

राग काफी

कैसे जल लाऊँ मैं पनियट जाऊँ ?
होरी खेलत नन्द लाड़िलो क्यों अनिबिहन पाऊँ ?
वे तो निलज फागमदमाते हौं कुल बधू कहाऊँ ;
जो छुवै 'रसिक बिहारी' अंचल तो धरती धस जाऊँ ॥

राग काफी

जावक युत युग चरन लली के।
मुकुत अमल अरुण दिवाकर मोहन-मानस-कुंजकली के।
मंजुल मृदुल मनोहर भाव निधि प्रमद शृङ्गार निकुन्ज गली के।
सुरतरु काम धेनु चिन्तामणि, भगवत रसिक अनन्य अली के।

राग काफी

बेदरदी! तोहि दरद न आवे।
चितवन में चितवस करि मेरो, अब क्यों हमसों आँख चुरावे।
कबसों पड़ी द्वारपै तेरे बिन देखे जियरा घबड़ावे ॥
नारायण महबूब साँवरे, चापल उरोधि गैल बतावे ॥

राग काफी

या साँवरे सों मैं प्रीति लगाई ।
कुल कलङ्क ते नाहि डरौंगी अब तो करौं अपनी मन भाई ।
बीच बजार पुकार कहौं मैं चाहे करो जग कोटि बुराई ।
लाल गुलाल मिली आँखन वो मृदु मुसकनि मेरे उर आई ।
बिन देखे मन मोहन को मुख मोहि लगत त्रिभुवन दुखदाई ।
नारायण तिनको सब फीको । जिन चाखी यह रूप मिठाई ।

राग भैरव

राम ~~जपु~~ जप राम जप राम जप बावरे।
घोर भव नीर निधि नाम निज नावरे ॥
एक ही साधन सब ऋद्धि सिद्धि साधरे।
ग्रसे कलि रोग योग संयम समाधि रे॥
भलो जो है पोच जो है दाहिनो जो बाम रे।
राम नाम ही सों अन्त सब ही को काम रे ॥
जग नभ बाटिका रही है फलि फूल रे।
धूआं कैसे धौरहर देख तू न भूल रे ॥ मन भूल रे।
राम नाम छाड़ि जो भरोसे करै और रे।
तुलसी परोसो त्यागि मांगै कूर कौर रे ॥

राग भैरव

जाग जाग जीव जड़ जोहै जग यामिनी ।
देह गेह नेह ~~जैसे~~ जान जैसे घनदामिनी ॥
सोवत सुपने सहै संसृत संताप रे ।
बूड़्यो मृग बारि खायो जेवरी के साँप रे ॥
कहैं वेद बुध तू तो बूझ मन माँहि रे ।
दोष दुख सुपने के जागे ही पै जाहि रे ॥
तुलसी जागे ते जाय ताप तिहूँ ताय रे ।
राम नाम ~~सुचि~~ शुच रुच सहज सुभाय रे ॥।

राग भैरव

सुमिर सनेह सो तू नाम रामराय को ।
सम्बल निसम्बल को सखा असहाय को ॥
भाग है अभागेहू को गुण गुणहीन को ।
गाहक गरीब को दयालु दानि दीन को ॥
कुल अकुलीन को सुन्यो है वेद साख है ।
पाँगुरे को हाथ पाँव आँधरे को आँख है ॥
माई बाप भूखे को अधार निराधार को ।
सेतु भव सागर को हेतु सुख सार को ॥
पतित पावन रामनाम सों न दूसरो ।
~~सुमि~~ सुमिरि सुभूमि भयो तुलसी सों ऊसरो ॥

कलह सप्तमी कथा

[illegible] ९ - वर्ष १५ [illegible]

प्रश्न: [illegible] ने [illegible] [illegible] [illegible] किया कि
कैसे आरम्भ हो गयी

उत्तर: नारद जी, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कि

प्रथम [illegible] [illegible] :— प्रथम [illegible]
[illegible] [illegible] के [illegible] किया [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] तब [illegible] [illegible] [illegible]
नहीं किया। [illegible] [illegible] [illegible] था। [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] तब [illegible] [illegible]।

नारद जी — [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] हुए [illegible] [illegible] हैं। [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] था [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
है। [illegible] [illegible] नहीं / [illegible] [illegible] / [illegible] [illegible]
ने कहा।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] हो गये। [illegible]

है। [illegible] है [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

2 - [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

कार्यकर्ता — एवमेव

[illegible] में यह है कि इनमें एकादि
सुगन्ध [illegible] है। जिससे [illegible] दिव्य
कार्यों के उपयोगी नहीं होता है। जिससे [illegible]
के [illegible] के कार्यों को [illegible]
होगा। इसके [illegible]

[illegible] [illegible]
— [illegible]
[illegible] होगा। [illegible]
[illegible] होने का [illegible] है।
[illegible]
[illegible] है कि [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] है। [illegible]
[illegible] नहीं होता।

इसके बाद कर्म प्रकृति उत्पन्न होती है [illegible]
[illegible] होते हैं [illegible]
करके [illegible] प्रेम को पुनः प्रदान करता हूँ।
मैं [illegible] दिव्य रूप सबको प्रदान करता
हूँ [illegible] [illegible] दिव्य [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] सबको [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] गया है।

कर्म प्रकृति [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] में [illegible]
है। [illegible]
[illegible] है। [illegible] है २०

स्वामीजीरू के सन्मुख होनेसे हो चुका। ठीक है आपसे इनका शरीर लौटा दिया जाय।

4 व्यासजीने कहा:— 'सत्यं सत्यं'। हमने प्रश्न किया कि यह शरीर इतने दिन इनसे अलग क्यों रहा और कौन-कौन अपराधोंसे अलग रहा।

इसपर पुनः व्यासजीने कहा:—

प्रधान कारण सन्मुखता। 2. द्वितीय अभिमान। 3 स्वाभिमान। 4 स्वेच्छा। और इसीसे क्रोध और द्वेषकी उत्पत्ति हुई।

द्वितीय कारण आपके संकल्पका कार्यका प्रारम्भ। द्वितीय 2 भविष्यमें कार्य करानेका कारण। 3 पापोंका संशोधन। 4 स्वामीजीरूका आविर्भावका।

5 ब्रह्माने कहा:— 'एवमेव' अनुपमय यही है कि इनमें ऐश्वर्यका गुणाभिमान होगा कि हमारे दिव्यकार्यों के सहयोगी नहीं हो पाते हैं।

इसके बाद [illegible] प्रेरणा [illegible] है जब आप
[illegible] करते हैं तो उसके
जीवन को [illegible] पुन: प्रकाश होता है।
[illegible] दिव्य रूप सबको [illegible]
में [illegible] दिव्य रूप में
[illegible] होगी [illegible] होगा
[illegible] सबको अपना दिव्य [illegible]
[illegible] । [illegible] को [illegible] में [illegible]
[illegible] गई है।

इसी प्रकार [illegible] श्री [illegible]
[illegible] आते हैं [illegible] अपने
[illegible] हैं [illegible]
आप [illegible] में [illegible]
है। [illegible] 'कोई [illegible] नहीं' [illegible]
[illegible] है। [illegible]

स्वामीजी के सन्मुख होने से हो चुका। ठीक है आपके इनका शरीर लौटा दिया जाय।

४ व्यासजी ने कहा:— 'सत्यं सत्यं'। हमने प्रश्न किया कि यह शरीर इतने दिन इनसे अलग क्यों रहा और कौन-कौन अपराधों से अलग रहा।

इसपर पुनः व्यासजीने कहा:—

प्रधान कारण सन्मुखता। २. द्वितीय अभिमान। ३ स्वाभिमान। ४ स्वेच्छा। और इसीसे क्रोध और द्वेषकी उत्पत्ति हुई।

द्वितीय कारण आपके संकल्पका कार्यका प्रारम्भ। द्वितीय २ भविष्यमें कार्य करानेका कारण। ३ पापोंका संशोधन। ४ स्वामिनीजी का आविर्भावका।

५ ब्रह्माने कहा:— 'एवमेव' अनुपमय यही है कि इनमें ऐश्वर्यकी सुगन्धमात्र रहे जिससे कि हमारे दिव्यकार्यों के सहयोगी नहीं हो पाते।

जिससे कि समय-समय पर कलेवर अव्यार्थ अलग होता रहेगा।

इतने में व्यासजी फिर बोले:—

अब आगे भविष्यमें ऐश्वर्य-माधुर्य आधा-आधा रहेगा। अर्थात् ऐश्वर्य माधुर्य समान-समान रहेगा। स्वामिनीजू की कृपा से अब पतन का खतरा नहीं है। ऐश्वर्य का संचय अब स्वामिनीजू करादेंगी। औ बहुत कुछ आ चुका है जिसके कारण पतन हुआ था।

अब इस यन्त्र के साथ जो पूर्व अनात्म प्रारब्ध जो महा बद्ध जीव की नाई था स्वतंत्र हो चुका। इसी कारण ही ऐश्वर्य का आविर्भाव नहीं होता था।

इसके बाद आर्य ब्रह्मने कहा:— "ठीक है जब आप सब लोग ऐसा कहते हैं तो मैं प्रेमका बलवर प्रेमको पुनः प्रदान करता हूँ। औ अपना दिव्यरूप सबको प्रदान करता हूँ। जिसकी जहां तक उस दिव्य रूपमें पहुंच होगी वहां तक वह कायम रहेगा।

वैसे तो सबको अपने दिव्यस्वरूप से स्वीकार कर चुका हूँ अनाय के रि मैं जहाँ शबरी इत्यादि की गति है।

कायब्रह्मने कहा श्री जी मुझे स्वरूप देखना चाहती है। तो मैं तो अपने भक्तों के आधीन हूँ। मेरी स्वस्थता और अस्वस्थता बाहर। और वैसे तो मैं सदा स्वस्थ ही हूँ। इनका (श्रीजी का) मन्त्रज कोई तात्पर्य नहीं। यन्त्र केवल मकान मात्र है। इनमें (श्रीजी में) दिव्य ज्ञान विशिष्ट है, पूर्ण ऐश्वर्य का ज्ञान है, पूर्ण परत्व का ज्ञान है। ये सब प्रेम की गति के बाहर है। और प्रेमियों के लिये इन उपरोक्त प्रणेता की जरूरत नहीं है। जहाँ ज्ञान वहाँ प्रेम का कार शरीरधारी होने पर प्रेम के स्थान पर ये ज्ञान कभी-कभी अनर्थमय हो जाते हैं — प्यार की कमी हो जाती है।

कौशल्या की स्थिति ठीक थी। क्योंकि उसने समान ऐश्वर्य और माधुर्य था। युधिष्ठिर तथा कौशल्या तीनों आइने से बेहतर थे। सुतकी प्रीति प्रतीति जिनकी ज्यों नृप के हो डारे।

आनन्द पद में [illegible]

1. प्रेम! प्राप्त साबुत गिलास ही पीने के काम आता है न कि फोड़ देने पर।

2. यह 25 तत्व के धातु से बना हुआ गिलास तुम्हें मिला था, पर, तुमने इसके हजार टुकड़े कर दिये, तो जल कहाँ से दे।

3. 4 वर्ष पूर्व गिलास भगवान ने फिर कृपा करके जोड़ दिया था, जिसे तुमने फिर तोड़ दिया। अब पर फिर तुम्हारी गिलास ~~[illegible]~~ के टुकड़े टुकड़े तुम्हारे सामने हैं। इन टुकड़ों को भी सम्भाल कर रखो और मत तोड़ो शायद कभी फिर कोई कृपा करके जोड़ दे।

4. 25 तत्व के संघात के गिलास को [illegible] पड़े हैं।

कामोद द्रुत ताल (त्रयताल) ([illegible])

ग म
मंपध मंप म रे सा सा रे प प प ध प
आऽऽ हेऽ री ऽ च त रूं ऽ मो रे म न
ग सा
मंपध मंप म सा रे सा सा - ध धनि प प
जऽऽ नऽ न म र ण दे ऽ इ घड र म
ग सा रे
सा सा रे रे सा सा म रे प - ध प
अ वि धु ल अ ज प र मा ऽ त म
0 3 4 × 0 2

अन्तरा

म प
प - सां - सां सां सां - सां रें सां सां
प
जा ऽ ले ऽ नि त छां ऽ ड जो र न
नि
सां ध सां सां सां रें सां सां धं धनि प प
प
औं ऽ व र न ब प हे र तऽ जा न
म ग सा
प मंपध ध - प प म रे सा सा ध प
प
त ऽऽ ऽ मे ऽ प ह छा ऽ र त त न
सा
सा सा रे रे सा सा म रे प - ध प
ह र रं ग नि त प र मा ऽ त म
0 3 4 × 0 2

गजल

किया बिस्मिल मुझे उसकी अदा के हाथ क्या आया ।
तड़पता छोड़कर तेग़े क़ज़ा के हाथ क्या आया ॥
दिखाकर हुस्ने जमाल अपना मुझे तो कर दिया शैदा ।
भला पूछे कोई उस महलका के हाथ क्या आया ॥
मेरे इस गुञ्चये दिल को कभी उसने न आ खोला ।
गई वालाई वाला उस सबा के हाथ क्या आया ॥
फिरा शहरो बियां बा तालिबे दीदार नारायण ।
बिठाया उसको पर्दे में ह्या के हाथ क्या आया ॥

गज़ल

जहाँ ब्रज राज कुल पाये चलो सखि आज वा बनमें ।
बिना वा रूपके देखे बिरह की लौ लगी तनमें ॥
न कल पड़ती है बेकल को न जी लगता है बिन जानी ।
भई फिरती हूँ योगिन सी सरेबाजार गलियनमें ॥
करूँ कुर्बान जी उसपर जनम भर गुन न भूलूँगी ।
मेरा महबूब जो लाकर बिठादे मेरे आंगन में ॥
नहीं कुछ गर्ज दुनियाँ से न मतलब लाज से मेरा ।
जो चाहो सो कहो कोई बला अब तो बदी मनमें ॥
तेरी यह बात साँची है नहीं शक इसमें नारायण ।
जो सूरत आ है मस्ताना वह पहुँचे कैसे बातन में ॥

ग़ज़ल

समझ बूझ दिल खोज पियारे आशिक होकर सोना क्या ॥
जिन नैनों से नींद गवाई तकिया लेफ बिछौना क्या ॥
सूखारूखा राम का टुकड़ा चिकना औ सलोना क्या ॥
कहत कमाल प्रेम के मारग शीश दिया फिर रोना क्या ॥

स्वामिन्या निर्विकर्षाणि रागाणि
अनरक्ताकान्यत्यावश्यकयानि =

१. आसावरी
२- कामोद ✓
३- केदार ✓
४- खम्भावती
५, गुणकली
६, चन्द्रकल्याण
७ - चन्द्रिका
८- चम्पाकली ✓
९ जैत~~कल्याण~~ श्री
१० देवरञ्जनी ✓
११ - नायकी कान्हरा
१२ - नारायणी
१३ पटमञ्जरी (बि॰) ✓
१४ पटमञ्जरी (का॰) ✓
१५ बागेश्री ✓
१६, बिलावल
१७ मधुवन्ती ✓
१८ मालकौंस
१९ मालवी
२० मालश्री
२१ मालगुञ्जी
२२, मालारानी
२३ मालिनी
२४ मालीगौरा
२५ राजेश्वरी
२६, रागेश्वरी
२७ रामकली,
२८ रामदासीमल्हार
२९ रेवती कान्हरा
३० लाजवन्ती ✓
३१ वैजयन्ती ✓
३२ श्याम केदार
३३ श्रीराग
३४ श्रीरञ्जनी
३५ सरस्वती ..
३६, सूहा (कान्हरा)
३७, सोहनी
३८, हंसकंकणी ✓
३९ हंसध्वनि ✓
४० हंसमञ्जरी ✓
४१ हंसश्री ✓

राग कामोद

कामोदो भाति युक्तः कि रिगधनिभिस्तीव्रकैर्मद्वयेन,
वादी चात्र प्रसिद्धः प्रविलसति सदा पञ्चमो रिस्त्वमात्यः।
स्तोको ऽनुष्मिन्निषादः प्रकटयति रुचिं वक्रगध्यावरोहे,
सानन्दं पूर्व यामे निशि विबुधजनैर्गीयते मञ्जु कण्ठैः॥
'कल्पद्रुमाङ्कुरे'

द्वै मध्यम तीरवे सर्वहि उतरे बक्र ग होइ।
परि बादी संवादि जहाँ कामोद कहे सोई॥
(चन्द्रिका सा)

यह राग कल्याण ठाट से उत्पन्न होता है

आरोहावरोह स्वरूप

सा रे, प, मे प, धप, निध सां। सां निध, प, मेपधप, गमप गमरेसा

पकड़

रे, प, मेप धप, गमप गमरेसा

कामोद त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

रे रे प प	ध ध प प	ग म प ग	म रे सा ऽ
रे प मे प	ग म रे सा	रे रे सा नि़	ध़ ध़ प़ प़
प़ प़ सा ऽ	रे रे सा. ऽ	ग म प ग	म रे सा सा
×	2	0	3

अन्तरा

प प सां ऽ	सां रें सां ऽ	गं मं पं गं	मं रें सां ऽ
सां रें सां नि	ध ध प प	ग म प ग	म रे सा ऽ
×	2	0	3

आमोद त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

रे सा (रे)म रे	प – प प	मे प ध प	(रे)म – (नि)(सा क)रे (मे)प
ह त म न	रं ऽ ग रा	ऽ ग मो को	अ ऽ ड़ इ
ध प (प)सां रें	सां प ध प	मेपध मेप गमप गम	(ग)म. रे सा (सा)म
ध त प र	स त ग नि	मोऽऽ ऽऽ हेऽऽ ऽऽ	अ मि त, क।
3	×	2	0

अन्तरा

ध प (प)सां सां	सां रीं सां सां	रीं सां (सां)मं रीं	सां ध प (मे प री)मेपध
प सु र स	ह च र को	उ क हे सं	ध र न काऽऽ
ध प (ग)म सा	रे रे सा सा	मं रीं सां मेपध	ध म रे सा
मो द क हे	च तु र गु	रु ज न कोऽऽ	सु म त, क।
3	×	2	0

कामोद – (त्रिताल) (मध्यलय)

स्थायी

ध प सां सां

म रे प प	– प ध प	ग म प पग	म सा रे सा
ऋ तु व सं	ऽ त स खि	मो ऽ म नऽ	भा ऽ व त
सा प ग ग	म रे सा सा	सा – रे सा	ध़ नि़ प़ प़
र स व र	सा ऽ व त	मो ऽ द ब	ढा ऽ ब त
प – सा सा	रे रे सा सा	ग म प पग	म सा रे सा
x आ ऽ मु कु	2 जं न म न	0 नि त त रऽ	सा 3 ऽ व त

अन्तरा

प प सां –	सां सां रें सां	सां ध सां रें	सां – ध प
न व प ऽ	ल्ल व न व	कु सु म सु	मं ऽ डि त
सा सा म मग	प प ध प	ग म प पग	म सा रे सा
ह र र ङ्ऽ	त रु व र	अ ति ह रऽ	षा ऽ व त
x	2	0	3

कामोद तिताला स्थायी

म रे प प	ध – प –	ग म प मग	म सा रे सा
त न म न	वा ऽ रूँ ऽ	गु रु च रऽ	ण न प र
सा प म ग	म रे रे सा	प प मंपध मंप	म सा रे सा
य दि पा ऽऊँ	ऊँ द र स	ब लि वऽऽ लिऽ	हौं ऽ जा ऊँ

अन्तरा

प प सां सां	सां सां रें सां	सां ध सां रें	सां सां ध प
म न कु सु	म सों क रि	गु रु प द	अ र च न
मे – प ध	– ध प प	मपध मंप म सा	रे – सा –
ऽ ऽ क भा	ऽ व ध र	मंऽऽ ऽऽ ग ल	गा ऽ ऊँ ऽ

कामोद - मध्य (मध्यलय)

स्थायी

(रे)म	रे	सा	रे	सा	(म)रे	प	प	प	—
ज	य	ति	न	व	ना	ऽ	ग	री	ऽ
(प)म	प	ध	ध	प	(म)प	—	प	म	—
स	क	ल	गु	ण	सा	ऽ	ग	री	ऽ
(रे)म	रे	प	प	प	(प)सां	रें	सां	(सां)ध	प
कु	ऽ	ब्ब	गु	ण	आ	ऽ	ग	री	ऽ
(प)म	प	ध	प	—	(ग)म	(म)प	(ग)म	(म)रे	सा
दि	न	न	मो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रि
×		2			0		3		

अन्तरा

प	प	प	(प)सां	सां	सां	—	रे	सां	—
ज	प	ति	ह	रि	मा	ऽ	सि	नी	ऽ
(सां)ध	(नि)ध	सां	सां	रें	सां	—	(सां)ध	प	—
कु	ऽ	ब्ब	ध	न	दा	ऽ	मि	नी	ऽ
(नि)सां	—	(सां)मं	(मं)रें	सां	(नि)सां	रें	सां	(सां)ध	प
म	ऽ	त	ग	ज	गा	ऽ	मि	नी	ऽ
(रे)प	प	ध	प	—	(ग)म	मसा	रे	—	सा
न	व	कि	शो	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	रि
×		2			0		3		

कामोद धमार (विलम्बित)

म	रे	सा	सा	रे	प	–	प	प	प	–	प	–	प	
सा	ल	मो	री	चू	ऽ	ऽ न	र		मो	ऽ	जे	ऽ	गी	
3				×					2		0			

अन्तरा

प	प	–	सां	सां	सां	–	सां	ध	–	सां	रें	सां	सां	
अ	बी	ऽ	र	गु	ला	ऽ	ल	मो	ऽ	प	र	जि	न	
ध	–	नि	प	–	गम	प	मग	म	रे	सा	–	ध	प	
डा	ऽ	ऽ	रो	ऽ	जिऽ	न	हीऽ	ऽ	पे	डा	ऽ	रो	ऽ	
प	ध	ध	मे	प	प	प	ग	म	प	म	रे	सा	सा	
जे	धी	र	ह	त	तो	रे	सं	ऽ	ग	ला	ला	मो	री	
×					2		0			3				

प्रोक्तेयं जयजयवन्ती का तु पूर्णा

गौनी क्वापि मृदुमो रिधौ च तीव्रौ

वादी रिविलसति पञ्चमो हि मन्त्री

सोरट्यङ्गत इह गीयते निशायाम् ॥

'अन्य कुंभ दूई'

द्वै गन्धार निषाद द्वै संवादै पारे लोइ।

सोरट ही के अङ्गते जयजय वन्ती होई ॥

जयजय वन्ती (खमाज ठाठ से उत्पन्न होता है) गायन का समय

रात्रि का दूसरा पहर

जयजय वन्ती – झप ताल (मध्य लय)

स्थायी

प़	प़	रे	रे	रे	रे	रे	रे	ग	सा
रे	ग	ग	म	प	ग	म	रे	ग॒	रे
नि़	नि़	सा	ऽ	सा	रे	ग॒	रे	रे	सा
नि़॒	ध़	नि़॒	सा	सा	रे	नि़॒	ध़	नि़॒	प़

अन्तरा

म	म	प	नि	नि	सां	ऽ	नि	सां	ऽ
नि	नि	सां	रें	ग॒ं	रें	सां	रें	सां	नि॒
ध	प	धं	म	ग	म	प	नि	सां	सां
सां	नि॒	ध	म	प	ध	म	रे	ग॒	रे
नि़	नि़	सा	ऽ	सा	रे	ग॒	रे	रे	सा
नि़॒	ध़	नि़॒	रे	सा	रे	नि़॒	ध़	नि़॒	प़ ।
×		२			०		३		

चितचढ़ी सखि मोरे सांवरी सूरत ॥
और कछुक नांहि मोरे ध्यान आवत ॥
सुखविलासदु सकल मोमन तवहु पाय पियाके दाश
पाश । छिन एक पावत चित चढ़ी ॥

 (मध्यलय)

स्थायी

नि़		री			ग सा				
ध़	नि़	ग	रे	—	रे	ग॒	रे	—	रे
चि	त	च	ढ़ी	ऽ	स	खि	मो	ऽ	रे
म					ग				
ग	—	म	प	—	म	—	रे	ग॒	रे
सां	ऽ	व	री	ऽ	मू	ऽ	ऽ	र	त
सा					ग				
नि़	—	सा	—	सा	रे	ग॒	रे	—	सा
ओं	ऽ	र	ऽ	क	छु	क	ना	ऽ	हिं
ध		प			ग				
नि़	धप	ग	म	प	म	—	रे	ग॒	रे
मो	रेऽ	ध्या	ऽ	न	आ	ऽ	ऽ	व	त
×		2			0		3		

अन्तरा

		ध			नि				
म	प	नि	ध	—	ध	नि॒	ध	नि॒	ध
सु	ख	खि	ली	ऽ	स	हु	ल	क	ल
					प		म		
म	—	ध	नि॒	धप	ग	म	रे	ग॒	रे
मो	ऽ	म	न	तऽ	ब	हु	पा	ऽ	य
सा					ग				
नि़	नि़	सा	—	सा	रे	ग	रे	रे	सा
पि	या	के	ऽ	द	र	श	प	र	स
सा					प				
सां	नि	ध	म	प	ग	म	रे	ग॒	रे
छि	न	ए	ऽ	क	पा	ऽ	ऽ	व	त
रे		रे							
ध़	नि़	ग॒	रे	—					
चि	त	च	ढ़ी	ऽ					

एरी आजु पिया अपने सङ्ग खेलौं जी होरी ॥

अबीर गुलाल ~~अमम~~ अतर अरगजा सुगन्ध
लिये भरभर झोरी ॥

जयजयवन्ती - धमार - (विलम्बित)

स्थायी

सा — ध़ नि़ | रे — — रे गरे | — मप | म ग म

ए ऽ री ऽ | आऽ ऽ ज ऽऽ | ऽ पिऽ | या ऽ ऽ

रे ग रे सा | नि़ — सा रे ऽग | रे सा | रे नि़ सा

अ प ने ऽ | सं ऽ ऽ ग ऽऽ | रवे ऽ | लों ऽ ऽ

नि़ ध़ प़ — | प़ सां नि ध प | मग म | रे ग रे

औ ऽ ऽ ऽ | हो ऽ ऽ ऽ ऽ | ऽऽ ऽ | ऽ ऽ री |

अन्तरा

म म प नि — | सां नि | सां — — | नि सां सां सां

अ बी ऽ र ऽ | ऽ गु | ला ऽ ऽ | ल अ त र

नि सां सां रें — | रेंगं रेंसां | सां — रेंनि | ध ध प —

मप सां नि ध प | मग म | रे ग रे

भऽ र ऽ भऽ | रऽ ऽ | को ऽ री

१) रैंटम्प
३) कैपसूल
१) सब्जी
५) बदजी
१) दही डिब्बा
१) साग
६) दवा
१) दूध नास्ता
१) दूध
१॥) धुलाई
२१॥)
३२॥
५३॥
॥) रिक्शा

जयजयवन्ती – धमार (विलम्बित)

स्थायी

(नि़) सा – (सा) ध़ नि़	(ग) रे – – (ग) रे गरे	म प	म ग म
आ ऽ ज ध	री ऽ ऽ लो ऽऽ	मो ऽ	ह न ऽ
(म) रे ग रे सा	(सा) नि़ (सा) नि़ सा रे –	ग –	रे सा –
ना ऽ ग र	ब्र ज ऽ में ऽ	ऽ ऽ	खे ऽ ऽ
रे नि ध़ प़	(ध) नि ध – म –	प ध	(म) ग – रे
ऽ ऽ ले ऽ	हो ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ री
(रे) नि़ सा (सा) ध़ नि	.		
3	x	2	0

अन्तरा

(प) म – प नि –	– (सां) नि	सां सां –	सां – सां –
ख्या ऽ ऽ ल ऽ	ऽ ना	ऽ ल ऽ	स ऽ ब ऽ
(सां) नि – सां रें –	गं रें	सां – –	(सां) रें नि ध प
स ऽ ऽ ङ्ग ऽ	ऽ स	खा ऽ ऽ	लें ऽ ले ऽ
(ध) प (ध) प नि ध प	– (ग) म	ग – –	म प म –
आ बी ऽ र ऽ	ऽ गु	ला ऽ ऽ	ऽ ल की ऽ
(प) प सां नि ध प	मग म	(म) [illegible] (म) ग रे	(रे) नि़ सा (सा) ध़ नि़
झो ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽऽ ऽ	ऽ ऽ री	झो ऽ ज ध
x	2	0	3

राग रामकली

रागो रामकलीति तु यत्र रिमधाः स्यु कोमला धैवतो ।
वादी रिस्तदमात्य ईरित इहारोहे मनो वर्जितो ।
सम्पूर्णं त्ववरोहणं निगदितं कैश्चिन्निषाद द्वयम्
प्रत्यूषे मधुरस्वरं सुमतयो गायन्ति यं गायकाः ।।
(राग कल्पद्रुमाङ्कुर)

भैरव भैरवली है राम कली वरजे मनि आरोहि
ओड़व सम्पूरण कही सम्पूरन अवरोहि

यह राग भैरव थाट से उत्पन्न होता है।

आरोह अवरोह

सा ग, म प, ध नि सां । सां नि ध प मं प ध नि ध
प ग, म रे सा ।

पकड़

ध प, मं प, ध नि ध प ग म, रे सा

रामकली त्रिताल (मध्य लय)

स्थायी

ग म नि ध	प ध म प	ध प - म	ऽ प ग म
ऽ ग म रे	ग म प ग	म प म ग	म ग रे सा
नि सा ग म	प ग ऽ म	सां नि ध नि	ध प ग म
0	3	+	2

अन्तरा

प प ध ध	सां ऽ नि सां	सां रें गं मं	रें रें सां ऽ
सां रें सां नि	ध नि ध प	ग म प ग	म ग रे सा
नि सा ग म	प ग ऽ म	सां नि ध नि	ध प ग म |

रामकली त्रिताल स्थायी

गम नि ध प	- ध पम प	(प) - म -	(प) - म ग
ऽ ग रि रै	ऽ न के ऽ ऽ	जा ऽ गे ऽ	पा ऽ गे ऽ
म ग म ग	रे रे म प	म ग म ग	रे रे सा -
मु च ऽ च	तु र मु र	ज न वा ऽ	व ल मा ऽ
नि सा ग म	प - प -	पध निसां सांरें सांनि	धनि धप मग म
मो ऽ र हि	मे ऽ रे ऽ	आऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ये

अन्तरा

प प प प	ध - नि नि	सां सां सां सां	नि सां सां सां
कि न गु ण	गा ऽ ल अ	ध र प र	अ ऽ आ न
रें - गं मं	रें रें सां सां	पध निसां सांरें सांनि	धनि धप मग म
गा ऽ ब क	ति ल क ला	गाऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ये
सां नि सां नि	ध नि ध प	म ग प मग	रे - सा सा
ह र रं ग	क व न ल	ती ऽ व ऽऽ	भा ऽ ग नि
नि सा ग म	प प प -	पध निसां सांरें सांनि	धनि धप मग म
न न म न	ध न मो ऽ	धाऽ ऽऽ वऽ रऽ	कऽ राऽ ऽऽ ये
0	3	x	2

ता० २५-२-६६ की बिक्री

	कीमत
चाय पुड़िया ३ -	१५ पैसा
तेल कड़ुवा ३०० ग्राम	१-४० पैसा
नमक आधा किलो	१० पैसा
सनलाइट साबुन	६२ पैसा
सर्फ - - - - - -	१-६२
गुड़ - १५० ग्राम	१५ पैसा
	५.४

बाकी रामलीला दास से जी ले ।।।

ता० २६-२-६६ की बिक्री

बीड़ी - - - -	५ पैसा
कड़ुवा तेल १ छटाँक	२५ पैसा

रामकली धमार - (विलम्बित)

स्थायी

सां	-	-	ध	-	नि ध		प म प			म - ग -			
धू	ऽ	ऽ	म	ऽ	ऽ	म	चा ऽ ऽ			ई ऽ ऽ ऽ			
ग	रे	-	ग	म	प	प	म ग -			रे - सा सा			
मो	ऽ	ऽ	ह	न	व	ज	नें ऽ ऽ			री ऽ अ ब			
नि	ला	-	ग	-	म	-	प - -			ध - - ध			
कैं	ऽ	ऽ	से	ऽ	ऽ	ऽ	मा ऽ ऽ			न ऽ ऽ र			
सां	-	-	नि	-	सां	-	ध - नि			ध प ग म			
है	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ ऽ ऽ			ऽ ऽ गो ऽ			
×					2		0			3			

अन्तरा

प	प	- ध	ऽ	-	नि		सां - सां			नि सां सां सां			
अ	बी	ऽ	र	ऽ	ऽ	गु	ला ऽ ल			के ऽ स र			
ध	ध	- नि	-										
ध	ध	- नि	-	सां	सां		रें - सां			नि सां ध, ध			
पि	च	ऽ	का	ऽ	रि	उ	ने ऽ क			रं ऽ ग, क			
सां	-	-	नि	सां	ध	नि	ध प म			प - ग म			
है	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ ऽ ऽ			ऽ ऽ गो ऽ			

राग वसन्त

वसन्तर्तौ गेयो मृदुल ऋषभस्तीव्र सकल:।
पहीनो मद्वन्द्व: समग पुनरावृत्ति रुचिर:॥
सवादी मामात्योऽप्यह्नि निशि चाव्याहत गति:।
स्थितस्तारे षड्जे स जगति वसन्तो विजयते॥

दो मध्यम कोमल रिखब चढ़त न पञ्चम कीन्ह। अल्प पुनाकुरे
सम वादी संवादि ते यह वसन्त कह दीन्ह॥

यह राग पूर्वी थाट से उत्पन्न हुआ है।

आरोह अवरोह

सा ग मंध रें सां। रें नि ध, प मंग मंग मंध मंग रे सा.

पकड़

... रें सां रे निध प मंग मंग

बसंत - त्रिताल (मध्यलय) स्थायी

सा रे ध नि | ध प मंग | मंध सां - | रें रें सां -
... ऽ | मं गं रें सां | नि ध रें नि | ध नि ध प
3 X 2

अन्तरा

... मं ध | मं सां - सां | नि रें सां ऽ | मं गं रें सां
... ध नि | ध प मं ग | नि ध मं ग | म ग रे सा
3 X 2

बसन्त त्रिताल (मध्यलय)

नि सा ग म नि ध रें नि ध प - मं ग ऽ मं ग

मं ध रें नि ध नि ध प मं ग ऽ मं ग रे सां —

3 x 2 0

अन्तरा

मं ध सां ऽ रें रें सां - नि रें गं मं गं रें सां ऽ

रें नि ध नि ध प मं ग मं ग - मं ग रे सा ऽ

बसन्त - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

मध सां नि (प) - मंग मं ग मं ध नि सां रें - सां —

ऋ तु ब सं ऽ तऽ म न भा ऽ प न खी ऽ ऽ ऽ

ध सां नि ध प - म ग मं नि मं गमं ग रे सा —

स ब मि ल आ ऽ ग उ मं ग सों भऽ ना ऽ वो ऽ

सा सा ग ग म ध सां - सां - निध नि - ध प मं

अ प ने प्री त म के ऽ सा ऽ ड़ऽ ला ऽ ड़ लैबि

0 3 x 2

अन्तरा

मग मं ध सां सां सां सां सां - सां सां रें - सां सां

रं ग बे ऽ रं ग त न जो ऽ ग स जा ऽ ब न

सां सां सां - रें रें सां - सां सां नि ध नि - ध ध

अ प ने ऽ घ र सों ऽ नि क स ऽ आऽ ब त

ध नि रें मं ग रें सां सां सां - निध नि - ध प मं

बसन्त एकताल (कथ्यताल)

स्थायी

नि	नि	सां	सां	नि	ध	नि	रें	नि	ध	-	प
फु	ल	वा	बि	न	त	डा	ऽ	र	डा	ऽ	र
मे	-	ध	नि	मे	ग	मे	ग	रे	रे	स	स
गों	ऽ	कु	ल	ही	ऽ	न	ब	कु	मा	ऽ	री
सा	-	सा	मं	ग	ग	म	ध	सां	सां	सां	सां
च	ऽ	न्द्र	व	द	न	च	म	क	त	द	प
नि	-	सां	रें (सां)	-	नि	ध	सां	नि	ध	प	
भा	ऽ	गु	रि	ओ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ।
x		0		2		0		3		4	

अन्तरा

म	-	ग	-	मे	ध	सां	सां	सां	रें	-	सां
ने	ऽ	हो	ऽ	च	लि	च	लो	कु	मा	ऽ	रि
सां	सांनि	रें	-	सां	-	सां	नि	सां	नि	ध	ध
अं	पड	नो	ऽ	खों	ऽ	च	ल	नि	मा	ऽ	रि
च	नि	रें	गं	गं	गं	मं	-	गं	रें	-	सां
आ	ऽ	ये	ऽ	ऋ	तु	रा	च	ऽ	न्द	ला	ऽ
सां	-	रें	-	सां	सां	नि	ध	रें	नि	ध	प
र	ऽ	सी	ऽ	ले	ग	री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ।
x		0		2		0		3		4	

वसन्त - त्रिताल (मध्य लय)
स्थायी

सां सां नि धु | प मं - ग | मं धु नि सां | रें - सां -
प न च र | वा ठा ऽ ढो | ना ऽ ई ऽ | री ऽ ऽ ऽ
सां नि नि | मं धु मं गमं | ग रे सा - | सा सा सा -
ऽ ऽ म न | मो ऽ हन ऽ | प्या ऽ राऽ | हू न मे न
मं धु नि सां | रें - सां - | नि - सां सां | नि धु नि मंधु
न ऽ ना च | ला ऽ वे ऽ | सै ऽ न न | की ऽ री ऽऽ
0 | 3 | x | 2

अन्तरा

मे - ग ग | मं - धु मंधु | सां - सां सां | रें - सां -
को ऽ र क | ल ऽ पि नऽ | आ ऽ व त | आ ऽ है ऽ
सां - सां नि | रें - सां - | (सां) - नि धु | धु नि रें मं
पा ऽ ऽ ऽ | पाऽ के ऽ | डो ऽ ले ऽ | अ नि व र
गं - रें रें | सां - सां - | नि - सां सां | नि धु नि मंधु
हरि ऽ त ल | गा ऽ वे ऽ | नै ऽ न न | की ऽ री ऽऽ।
0 | 3 | x | 2

वसन्त त्रिताल स्थायी

धु सां नि धु | प - म ग | मं धु नि सां | रें रें सां -
न इ प व | ल ऽ न्त | न ई ऽ | ल ब ल वि | यां ऽ
नि रें - मं | गं रें - सां | नि - सां रें | (सां) - नि प
न ई ऽ न | ई ता ऽ न | गा ऽ व त | गो ऽ पि ऽ
0 | 3 | x

खमाज

म ग म प	नि - ध ध	ध - ध सांनि	रें - ध ध
न ह ये ऽ	च ऽ श्री न	ऽ ऽ ऽ पुऽ	वाऽ ज न
नि रें गं गंमंरें	गंमं गं रें ध	नि - ध रें	(ध)- नि धु
न व ल राऽऽ	ऽऽ धि का ऽ	भाऽ नु कि	शोऽ रीऽ

नि ध नि प

न हु प.. व.

0 3 x 2

"मुद्गल जी का आत्म समर्पण।।"

देवि पूजि पद कमल तुम्हारे, सुर नर मुनि सब होय सुखारे।।

महामाया की प्रतिनिधि स्वरुपा सिद्ध योगिनी कमला सरकार जी आपने जो मुझे जन्म जन्मान्तरों का अनुरागी वा सदैव का सहयोगी जान उन्तालिस वर्ष पूर्व के देह भाव के सम्बन्ध को नया जन्म लेकर मेरे उद्धार हेतु कृपा करने को जो आप पधारीं इसका मैं महान आभारी हूँ इस महान असीम अनुकम्पा के लिये भूरि २ धन्यवाद देता हूँ आशा करता हूँ उद्धार की अन्तिम स्टेज तक मेरा हाथ न छोड़ा जावेगा

दिनांक १७-१-१९६४

बिरला नगर म. न. ४२

ग्वालियर

आपकी अनुग्रह का
आकांक्षी स्वयम आपकी इच्छा का
अनुरागी लक्ष्मी नारायण मुद्गल

विकराल दुर्गाष्टक

दैत्य संघार वेद बिचारन दुष्टन को तुमहि खलती हो, खंग त्रिशूल लिये धनुबान
और सिंह चढ़ै रण में लड़ती हो, दास के साथ सहाय सदा, सो दया करि ज्ञान
फतेह करती हो। मोहि पुकारत देर भई जगदम्ब विलम्ब कहा करती हो।
आदि कि ज्योति गणेश की मातु कलेश सदा जन के हरती हो।।२।। कोकोई
दैत्यन युद्ध भयो, तहं शोणित खप्पर ले भरती हो।।३।। कि कहुं देवन रक्ष
कियो, तहं धाय त्रिशूल सदा धरती हो।।४।। सेवक से अपराध परो, कछु
आपन चित्त में ना धरती हो, दास के कार्य सम्भार नितै जन जानि दया को
मया करती हो।।५।। शम्भु के प्राण संघारन को जग तारन को तुम सिन्धु सुता
हो।।६।। को तो गई बलि संग पताल कि तो पुनि ज्योति प्रकाश गती हो,
कोधौं काम परो हिंगलाजहि, सिन्धु के बिन्दु में जा छिपती हो।।७।।
जुगुल [illegible] घोर लवारन को बहु मारन को तुमहूं डरती हो।।८।।
बान सिरान कि सिंध [illegible] कि ध्यान धरे प्रभु को जपती हो।। कोकहुं
सेवक कष्ट परो, तहं अष्ट भुजा बल दै लड़ती हो।। सिंह चढ़े देवि क्षत्र
बिराजत, लाल ध्वजा रण लै फिरती हो।।९।। देवि तुम्हारो करौं विन्ती
तुम काज करो सुनती हो। ब्रह्मा विशनु महेश कि हो कि सदा
जग में फिरती हो।।१०।। चंडी चंडी ह्वै जाय वधे [illegible] जाय के शत्रु निपात गती हो।
मार दियो महिषासुर को हरि केहरि को तुम ही पलती हो।।११।। मधु कैटभ दैत्य
विध्वंस कियो, नर देवन को तुम ईशपती हो। दुष्टन मारि आनन्द कियो, निज
दासन के दुख को हरती हो।।१२।।

साधु . लगावत हैं तिनके तन को तुरतहि तरतो हो। जो जो ध्यान धरें तुम्हरा, तिनको प्रभुता चित दै करतो हो ॥१३॥ तेरो प्रताप तिहुं पुर में तुलसी जनको मनसा भरतो हो। होउ दयाल दया करिके जगदम्ब विलम्ब कहां करतो हो ॥१४॥

नमामि मंगले ऽमंगलादि को विदारिणी, नमामि भद्र कालिके ऽभद्रभावहारिणी

स्थाई

0	3	x	2
— ध ध नि	ध म ग रे	म — म प	ग — रे सा
ऽ जा मि नि	तु म बिनु	कौ ऽ न ह	मा ऽ री ऽ
रे सा नि ध	सा — सा सा	म म प ग	म नि ध ध
अ श रं रा	की ऽ तु म	श र ण द	या ऽ म यी
ग म ध नि	सां सां ध नि	सां — नि ध	म ग रे सा
सु नि ये ऽ	ज न क दु	ला ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ री ऽ

अन्तरा

~~सां नि ध म~~	~~ग रे सा सां~~	~~सां सां नि ध~~	~~सां सां सा सां~~
~~सं सृ ति सिं~~	~~धु ऽ धु का ऽ~~	~~म क्रो ऽ~~	~~धा ऽ दि क~~

0	3	x	2
सां नि ध म	ग रे सा सां	सां — नि ध	सा — सां सां
सं सृ ति सि	ऽ न्धु का ऽ	म क्रो ऽ	धा ऽ दि क
ध नि सां मं	गं रें सां नि	सां नि सां रें	नि — ध —
न ऽ क्र मी	ऽ न भ ख	भा ऽ ऽ ऽ	री ऽ ऽ ऽ
म ध ध नि	ध — म प	ग — म ग	रे — सा —
ज ऽ न्म अ	ने ऽ क नि	म ऽ ज्ज त	हों हौं
नि सा ग म	ध — ध नि	सां — नि ध	म ग रे सा
कृ प या ऽ	लो ऽ इ 3	वो ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ती ऽ

बागीश्वरी

स्थायी स्वामिनि! तुम बिनु कौन हमारो।
अशरण की तुम शरण ~~स्वा~~ दयामयि! सुनिये जनक दुलारो॥
अन्तरा संसृति सिन्धु काम क्रोधादिक, नक्र मीन झख भारो।
जन्म अनेक निमग्न तहाँ हौं, कृपया लेहु उबारो॥१॥
कासों विनय करौं तारणको, कौन समर्थ महारो।
सबही बूड़ि रहे भव सागर, "प्रेम" है निपट गवाँरो॥२॥

॥ जयजय वन्ती॥

स्थायी स्वामिनि, हम तेरी कब ह्वै हैं?
पल-पल छिन-छिन मनमधुकर कौ, चरण कमल निवसै हैं॥स्वा॥
महल-टहलमें दिवस-यामिनी, पलसम ताहि बितै हैं।
ह्वै निमग्न तव प्रेम-सिन्धु में कब तव ध्यान लगै हैं॥१॥
नयननते सब वस्तुजातमें तेरो दर्शन पैहैं।
गुनिहैं सकल तुम्हारी मूरति, कब ऐसी ह्वै जैहैं॥२॥
रसना रोपि नाम-नूतन तरु, अँशुवन नीर सिंचैहैं।
तन पुलकित मन विमल कण्ठ गद्-गद यश तेरो गैहैं॥३
अपनो सुहृद, तात जननी गुरु, बन्धु मित्र तुव पैहैं।
मन वच कर्म तुम्हारी रुचिकौं सकल भाँति कब रखिहैं॥४॥
काम क्रोध लोभादि रिपुन ते गत विकार कब ह्वै हैं।
मानुहि कहौ तुम्हारी कब यह, साँची 'प्रेम' कहै हैं॥५॥

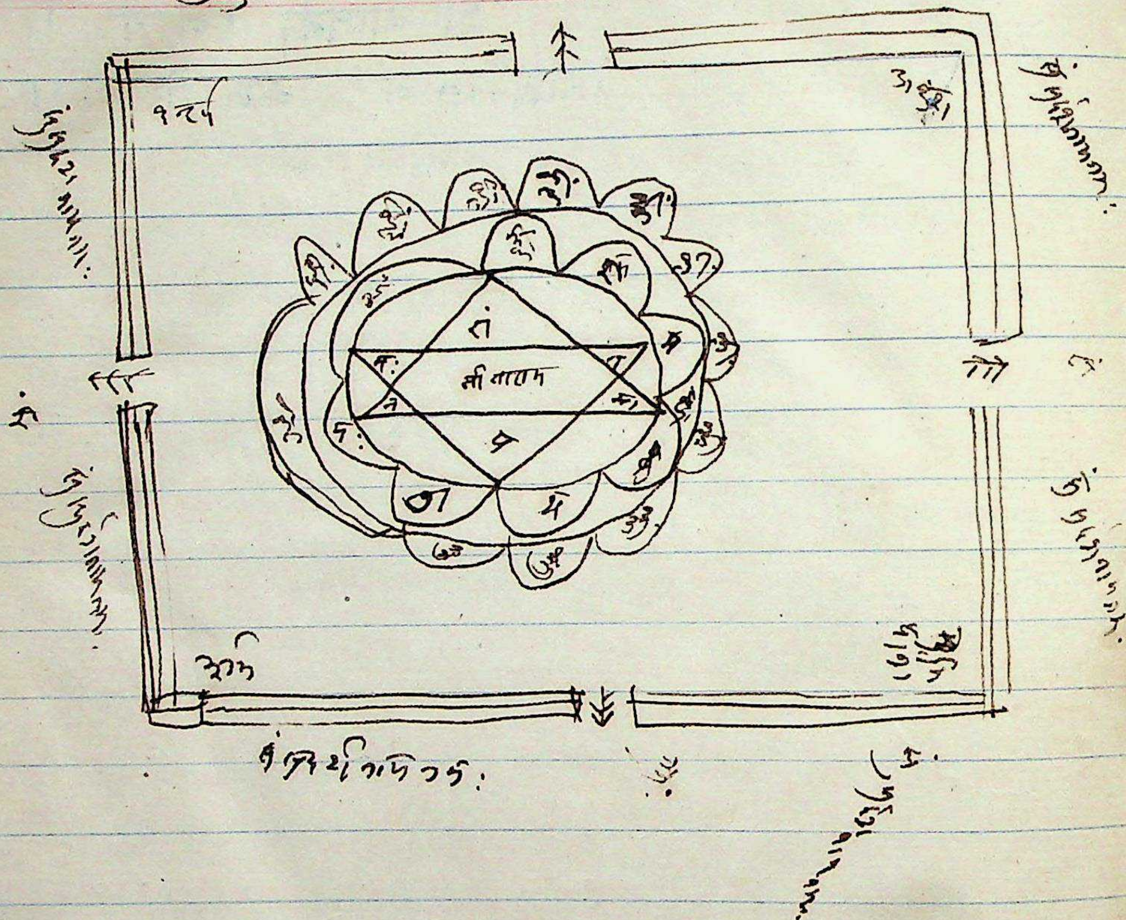
राग मालो गौरा

स्थाई

0	3	x	2
नि़	ध़ नि़ रे नि़ध़	प़ - नि़ ध	सा नि़ रे ध़
क	क अ प ने	ऽ ठ उ	स्वा ऽ मि नि
ग रे सा,			
प्रे ऽ मा			

	3	x	
ध़	नि सा - सा	रे - मे -	प - रे -
ति	खि वा ऽ स	मर ऽ त व	च र क
ग रे सा, रे	मे मे प -	ध प नि ध	मे ग गमे धमे
मेल मद म	न म धू	उर करि	र द ने ऽ
गम गरे सा			
मा ऽ ऽ			





गजल

अब ना विलम्ब करिये, श्रीस्वामिनी हमारी ॥
रघुवीर-प्राण-प्यारी, मिथिलेशकी कुमारी ॥१॥
बीते हैं जन्म मेरे, हो काम-क्रोध-चेरे,
अपनाओ अब सवेरे, अवगुण सभी बिसारी ॥१॥
पापी जयन्त पर भी तुमने कृपा जो की थी,
क्या अब नहीं कृपा वह, है दीन पर तुम्हारी ॥२॥
लङ्काकी राक्षसीको तूने ही था बचाया,
बजरङ्गवीर-बलसे, क्या नीति वह बिसारी ॥३॥
इस जन्ममें कभी भी, प्रेमा तुम्हारी होगी,
अविलम्ब अब बतादो, सर्वस्व मेरी प्यारी ॥४॥

श्रीशांघ्रियुग्म शेषशारदभवाद्यावन्दितां पाविनी
संसारभयनाशिनी भगवती श्याकीट ब्रह्मेडिता ।
दिव्यज्योतिमयी

बाबूजी ४०) देकर गये
कैसे खर्च हुआ !.
२१-६ को २.५०.०० डाक्टर को दिया रामू ने
२२.६ को २.५० रु० डाक्टर को दिया ,,
२३.६ को २.२० की दवा खरीदी
२

बीदी का हिसाब

1·25 बिस्कुट ~~चमाची~~

2·00
2·20 रसीद कटवाँ राम् ने

4·45

7·80
1·60
·80

12·20

10·00
4·45
6·55

20·00
17·20
2·80

...थ।
...हृदय ॥२॥

विरह दवानल-जलत ~~भक्त~~ भक्तहित, शीतल पवन मलय।
मोपर साधकौन परखकी वदला लेहु कथय ॥३॥
जो क्षण बिलग होत तेरी क्या? कहतो दशा गुणय।
प्रेम अली जीवितमृत अवतो, करहु जो तुमहि ~~हल~~ चय ॥४॥

मनजी अनत कहूँ नहि जैये ॥
निखिल दिव्यगुण-सिन्धु स्वामिनी जू में जाइ समैये ॥
चाख्त बितौ विषयरस बहु दिन, कबहूँ नाँहि अघैये
घृत संयोग पाइ पावक ज्यों, बढ़त-बढ़त अधिकैये ॥१॥
परम सरल वत्सलतम स्वामिनी अपनो धाम बनैये
लहिये दिव्य प्रेमरस नित नव पल सम आयु बितैये ॥२॥
अन्तहु पाइ अचल पद स्वामिनी पदपङ्कज अपनैये
प्रेम अली मकरन्द स्वाद लै अपनो भाग मनैये ॥३॥

२ सफाई—

इक स्वामिनि ही बलमेरो।
नहिं अब रह्यो बुद्धि विद्याबल, धनजन-बल बहुतेरो ॥
महा अधम अतिनीच पतित हम, पापिन माँहि नरेरो ॥
पाप-ताप अपराध शापके, हौं निश्चित एक डेरो ॥
प्रेम अली सबही बल वञ्चित, स्वामिनि ही बल मेरो ॥

2

अरे ओ बहुवल्लभ निर्दय!
अश्मसार अरुवज्र परुष अति, अबहु तो होहु सदय ॥१
कोमल तोहि कहत कुसुमहुँते, कवि, कोविद वा ऋषय।
मोरेहि बार कठोर अमित क्यों, है काल कल्ज-हृदय ॥२॥
विरहदवानल-जलत भक्त हित, शीतल पवन मलय।
मोपर साधकौन प्रवकी बदला लेहु कथय ॥३॥
जो क्षण विलग होत तेरी क्या? वहतो दशा गुणय।
प्रेम अली जीवित मृत अबतो, करहु जो तुमहिं उचय ॥४॥

Directions for me by My Goddess

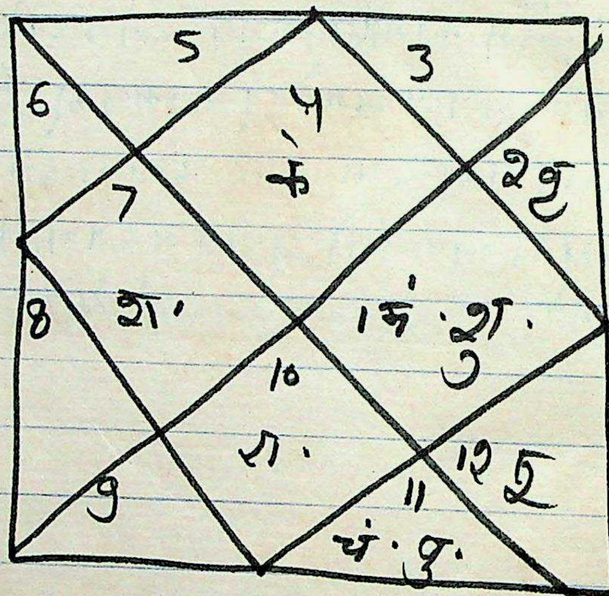
Shri Swaminiji yoo.

प्रतिदिन १ स्कन्ध का पाठ केवल दशम स्कन्ध दो दिनमें।
बीचमें एकदिन विश्राम। फिर अमावशसे प्रारम्भ।
भोजन प्रतिदिन ३ बजे। आधा सेर। नैष्पाप बजाय।

6.50 100
4.40 80
5 60 20

मनुआँ स्वामिनी ही कौ गुनिये।
साँची हितू तुम्हारी वेही, औनहिं अपनैये॥
मनवचकर्म निरन्तर रत ह्वै, उनही में रम जैये।
कलमष दलन विमलयश इनके श्रवणन तें नित सुनिये॥
मुनि दुर्लभ भवभीति विनाशन, दर्शन इनके पैये।
श्वेत कञ्ज पद पद्म मनोहर मन मधुकर ह्वै जैये॥
रानुराग मकरन्द पान करि अपनो आपु भुलैये॥
भव्य भवन भवसिन्धु पोत पद पंकज में निर्मैययै।
संसृति द्वन्द दाव व्याकुल अति प्रेमहि आनि बिठैये॥

श्री
भग
ग
व
ती
ग
ङ्गा
जी



[illegible] गत वि[illegible] ११ है

[illegible] हेकि बन! [illegible] करें है।

[illegible]

[illegible]

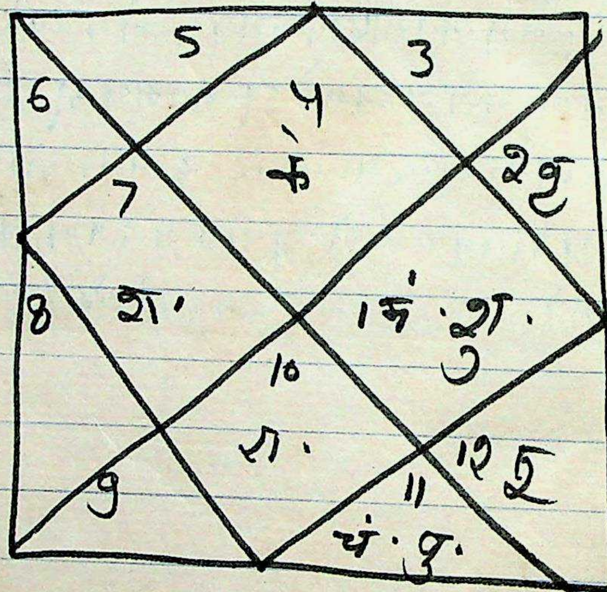
[illegible] Engineering

[illegible]

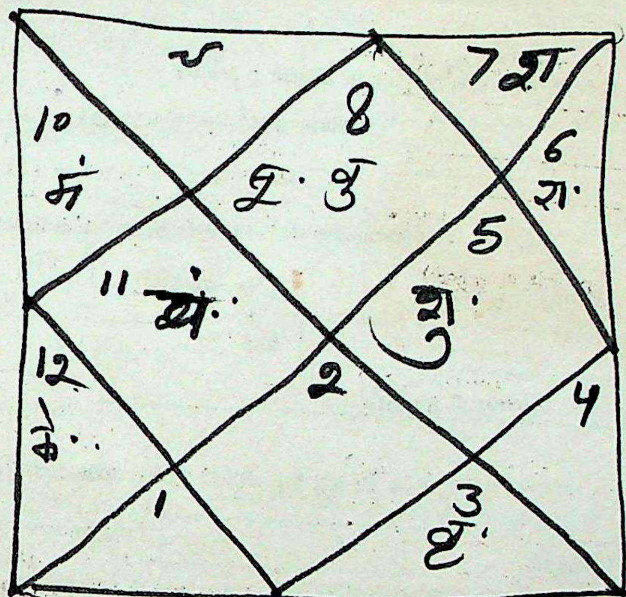
V. P. Khan[illegible]

P. O. [illegible] [illegible]

श्री
भग
ग
व
ती
ग
ङ्ग
जी



काम क्रोध लोभ मोह रिपु ते गति [illegible] है
[illegible] टेक बन! [illegible] साँची प्रेम करै।



श्री

भग [illegible]

[illegible] हुए हैं

[illegible] मन मधुकर कौ

[illegible] ॥

[illegible] दिवस [illegible], पल [illegible]

बिते हैं। [illegible] नव प्रेम सिन्धु में [illegible]

~~[illegible] गये हैं॥ [illegible]~~ [illegible] ध्यान लागे हैं॥१॥

[illegible] नव [illegible] तेरो दर्शन पैहैं

[illegible] [illegible] ऐसो [illegible] हैं॥२॥

[illegible] अश्रु [illegible] हैं।

तन पुलकित मन विमल [illegible] गई हैं

तेरो ही [illegible] हैं॥३॥

अपनो सुहृद [illegible] गुरु, बन्धु मित्र [illegible] हैं।

[illegible] को सकल [illegible]

काम क्रोध लोभ मोह रिपुन ने गति बिगाड़ी है

आयुर्वेद हो बिन ~~[illegible]~~ हरि कब! तेरी साँची प्रेम करी है।

आयुर्वेद कहाँ [illegible] पर

श्री [illegible]

C/o Jakhodia Engineering Works

V. P. Khan[illegible]

P.O Siwan Tannery

Kanpur